आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाजी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-123 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जुलाई 2024 | मूल्य - 5 रूपए

बरसात से प्रभावित, सड़क और कामकाजी बच्चे कई दिनों तक भूखे

बालकनामा रिपोर्टर, काजल, सरिता, दीपक, राजकिशोर, किशन

बारिश का मौसम भी कितना सुहाना होता है। हर साल बारिश की याद तभी आती है जब हमें गर्मी कुछ अधिक सी महसूस होने लगती है। कभी अधिकतर लोग चाहते हैं कि बारिश होती ही रहे और बंद ही ना हो तो कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो चाहते हैं की बारिश हो परंतु इतनी अधिक ना हो क्योंकि अधिक बारिश होने से अनेक समस्याओं से जूझना पड़ता है। यहाँ हम बात कर रहे हैं सड़क एवं कामकाजी बच्चों की, जो खुले आसमान के नीचे सड़क के किनारे और किराए की झुग्गी बस्तियों में अपना जीवन यापन कर रहे हैं। ऐसा नहीं की सड़क एवं कामकाजी बच्चों को बारिश का होना अच्छा नहीं लगता अपितु बारिश तो अधिकांशतः लोगों को पसंद ही होती है। अब हम आपको यहाँ यह बताने का प्रयास करेंगे की अधिक गर्मी पड़ने के दौरान सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस तरह बारिश होने का इंतजार करते हैं? दिल्ली की झुग्गी बस्ती में रहने वाली 13 वर्ष की बालिका चाँदनी (परिवर्तित नाम) ने बताया की, जैसे की मौसम हर वर्ष बदलता रहता है और इसी क्रम में एक वर्ष में कुछ दिनों के लिए बरसात का मौसम भी आता है। बरसात के मौसम का हम बेसब्री से इंतजार करते हैं क्योंकि जब अधिकतर तेज गर्मी पड़ती है तो गर्मी का तापमान इतना तेज हो जाता है कि उस गर्मी को आम व्यक्ति सहन नहीं कर पाते तो इतनी तपती गर्मी को बच्चे कैसे सहन कर सकते हैं? इस कारण जब अधिकतर गर्मी होती है और गर्मी सहन नहीं होती है तो हम चाहते हैं कि जल्द से जल्द बारिश हो जाए ताकि हम उस बारिश में स्नान करके अपनी गर्मी दूर कर कुछ राहत पा सके। हमारे समाज का हर एक बच्चा इस स्थिति में यह व्यवस्था चाहता की जब बारिश हो तो उसे उस बारिश में भीगने का अवसर मिले, अतः बच्चे बारिश में नहाते है और बारिश में नहाने के बाद कुछ मात्रा में उन्हें गर्मी के प्रकोप से राहत महसूस होती है। ये बच्चे बारिश के पानी में काफी मस्ती भी करते है और नहाने के बाद काफी खुश हो जाते हैं। इस विषय पर और अधिक जानने के लिए पत्रकारों ने जयपुर में रहने वाले बच्चों से बातचीत की तो लखेसरा बस्ती में रहने वाले 15 वर्ष के अरुण (परिवर्तित नाम) ने बताया की बारिश का मौसम बड़ा सुहाना होता है। बारिश में सड़कों पर नजर डालेंगे तो अधिकतर बच्चे बारिश के पानी में नहाते हुए दिखाई देते है परंतु अधिकतर बच्चे बारिश के पानी से इसीलिए नहाते हैं ताकि उन्हें बढ़ते तापमान से कुछ आराम महसूस हो सके। इसके अलावा गर्मी के मौसम में आम का सीजन भी चलता है जिसके कारण बच्चे गर्मी के मौसम में आम खाते हैं और कभी-कभी अधिक आम के सेवन से, लगातार अस्वच्छ कपडे पहनने से एवं अधिक पसीने वाले माहौल में रहने से बच्चों के शरीर पर घमौरी पैदा हो जाती है, घमौरी पैदा होने के कारण बच्चों के शरीर पर फोड़े-फुंसी निकल आते हैं और इनको दूर करने के लिए भी कई बच्चे बारिश के पानी से नहाते हैं ताकि वह घमौरी, फोड़े-फुंसी आदि से निजात पा सके।

बारिश में नहाने के बच्चों ने और अन्य कारण भी बताएं जिसमें गुड़गांव में रह रहे 12 वर्षीय कालू (परिवर्तित नाम) ने बताया की बारिश होने से पहले गर्मी का तापमान कुछ बढ़ सा जाता है और हम सभी अपनी टिन की झुग्गी बस्ती में रहते हैं। अधिक गर्मी पड़ने के बाद टिन की झुग्गी में रहना बहुत मुश्किल हो जाता है और फिर हम भगवान से प्रार्थना करते हैं कि जल्द से जल्द बारिश हो जाए ताकि हम बच्चे उसमे नहा कर और कुछ मस्तियों के साथ गर्मी को दूर कर सके, हालाँकि बारिश होने के दौरान मौसम फिर ठंडा हो जाता है और गर्मी का असर कम प्रतीत होता है। अधिक गर्मी पड़ने के बाद सड़क एवं कामकाजी बच्चे किस-किस तरह बारिश का इंतजार करते हैं, अब हम यह तो जान ही गए होंगे? इतना ही नहीं बारिश का वैसे कोई ठिकाना नहीं होता की बारिश कितनी देर तक और कितनी ज्यादा या कम हो रही है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि अधिक बारिश होने के कारण इन सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अनेक समस्याओं से जूझना भी पड़ता है। जब बालकनामा पत्रकार नोएडा पहुंचे और इस विषय पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों से जाना तो ग्रेटर नोएडा की बस्ती में रह रहे 12 साल के सनी (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम वर्तमान में अपने माता-पिता के साथ इस झुग्गी बस्ती में रहते हैं। इस स्थान पर लगभग 300 से अधिक झुग्गियां है, ऐसा नहीं है की झुग्गी में रहने वाले बच्चों एवं बड़ों को समस्या का सामना न करना पड़ता हो पर कुछ ऐसी समस्याऐं भी हैं जिन समस्याओं को हम बिना डरे सामना कर लेते हैं परंतु जब मनुष्य ही इस गर्मी का प्रकोप सहन नहीं कर पा रहे तो जमीन पर रह रहे जीव-जंतु कैसे सहन कर पाएंगे? जब बारिश होती है तो एक ऐसी समस्या पैदा हो जाती है कि उस समस्या का समाधान करने के लिए जान पर भी बाजी लगानी पड़ती है। जब अधिक बारिश हो जाती है और यहाँ-वहाँ अधिकतर पानी भर जाता है तो वह पानी जमीन के अनेक गड्ढों में पहुंच जाता है और अनेक गड्ढों में तरह-तरह के जीव रहते हैं जिसके कारण सांप, बिच्छू आदि निकलते है और वे घर में घुस जाते हैं, इतना ही नहीं जब उन पर अचानक नजर पड़ जाए तो किसी भी इंसान का डर जाना लाजमी होता है और जब वह सांप झुग्गी में पहुंच जाता है तो हम बच्चों का सोना एवं खाना बिल्कुल बंद हो जाता है जब तक की वह सांप बाहर निकल कर कही चला नहीं जाता। सभी यह बात जानते हैं कि सांप या ऐसे ही जीवों को मारना पाप है परंतु जब सांप नहीं जाता और एक स्थान पर बैठ जाता है एवं काटने के लिए दौड़ता है मजबूरन अपनी जान को बचाने के लिए हमें सांप की जान लेनी पड़ती है। अतः बारिश होने के एक कारण हमें इस प्रकार की समस्याओं का भी सामना करना पड़ता हैं। अब शायद यह कहानी सुनाने के बाद आप थोड़ा गंभीर हो जाएंगे। पश्चिम दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में रहने वाली 9 वर्ष की बालिका ने बताया की हम जिस स्थान पर रहते हैं इस स्थान के लगभग 100 मीटर की दूरी पर शमशान घाट मौजूद है और इस स्थान पर मंदिर भी मौजूद है और हमारे पिताजी उस मंदिर में पूजा आदि करते हैं एवं उस मंदिर की साफ सफाई और देखरेख भी करते हैं। हमारी झुग्गी इतनी मजबूत नहीं है कि वह झुग्गी में समस्याएं ना आए और हमारी झुग्गी ढलान के स्थान पर बनी हुई है। बारिश का मौसम चल रहा है और अभी कुछ दिन पहले इतनी तेज

शेष पृष्ठ 2 पर

बालकनामा टीम ने मनाया योग दिवस, जाना योग का महत्व

बातूनी रिपोर्टर सुमित,
बालकनामा रिपोर्टर राज किशोर

सुमित जो की 11 साल का बालक है वह गुरुग्राम वजीराबाद के पीछे वाली बस्तियों में रहता है। सुमित 7 सालों से वहां अपने माता-पिता के साथ रह रहे हैं। बालक की माता घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम करती है तथा पिता जी माली का काम करते हैं। पत्रकारों ने जब सुमित से चर्चा की तो बालक ने बताया की भारत में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़े पैमाने पर मनाया जाता है जिसकी तैयारी बड़े जोर-शोर से सरकार कर रही थी और इस तरह योग दिवस का मुख्य समारोह दिल्ली के राजपथ पर हुआ जिसमें स्वयं प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने शिरकत की। इस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री ने राजपथ पर लगभग 36000 लोगों के साथ यह योग दिवस मनाया वहीं गुड़गांव के लिए भी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के शुभ अवसर पर हमारे हरियाणा के बड़े अधिकारीयों ने योग दिवस में भाग लिया। इस योग दिवस में बड़े- बड़े अधिकारी शामिल हुए एवं गुड़गांव के ताऊ देवीलाल स्टेडियम में सड़क और कामकाजी बच्चे भी योग में भाग लेने के लिए पहुंचे और योग किया फिर योग खत्म होने के बाद बच्चों को रिफ्रेशमेंट भी प्राप्त हुआ जिसमे बच्चों को जूस और

बिस्किट दिए गए और बच्चों के लिए बस की सुविधा भी उपलब्ध की गई जिससे कि बच्चे सुरक्षित तरीके से देवीलाल स्टेडियम में पहुंचे और वहां योग में भाग लें और फिर बच्चे अधिक से अधिक मात्रा में वहां पहुंचे और योग में भाग लिया वही हमारे चेतना संस्था के द्वारा संस्था के कार्यकताओं के द्वारा बच्चों को स्वस्थ रहने के लिए योग का आयोजन करवाया गया जिसमे की 63 बच्चों ने भाग लिया। योग के दौरान सभी बच्चों ने बहुत अच्छे तरीके से योग किया साथ ही योग दिवस पर बच्चों ने अच्छे-अच्छे पोस्टर बनाए जो योग की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाल रहे थे।

आर्थिक तंगी के कारण कागज एवं गत्तों के खिलौने बनाकर बच्चे बहलाते हैं अपना मन

बातूनी रिपोर्टर हसन व रिपोर्टर किशन

अधिकतर जगह या अधिकांश घरों में ऐसा होता है कि घर का एक व्यक्ति कोई गलत कार्य करता है और उसका परिणाम पूरे परिवार को झेलना पड़ता है तो कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि हम उस परिणाम के कारण अपने मनपसंद कार्य के स्थान पर हमारे अन्य उद्देश्य को प्राप्त करने में असफल रह जाते हैं। जब दिल्ली में रह रहे 12 वर्ष के बालक से बात की तो उसकी कहानी भी कुछ इसी भाँति प्रतीत हुई। बालक ने कहा की हम अमुक स्थान पर गत 6 माह से रह रहे हैं और पिताजी यहाँ 4 वर्ष से रह रहे हैं। हम अपने गांव में अपने घर पर रहा करते थे, गांव में कोई कामकाज नहीं था तो गांव में भी दूसरों के यहां खेत काटने के लिए जाते थे अर्थात पिताजी एवं माताजी दूसरों के घरों में मजदूरी करने के लिए जाते थे तब जाकर हमारे घर का गुजारा हो पाता था। हमारा घर पहले मिट्टी से बना हुआ था और जब-जब बारिश आती थी तब-तब घर बारिश के पानी के कारण भर जाता था। एक दिन पिताजी ने सोचा की कुछ लोन लेकर घर को बनवा लेते हैं ऐसे पिताजी ने फिर बीस हजार रुपए का लोन लिया और उन पैसों से घर बनवाया परंतु वह लोन हमें 1 वर्ष तक चुकाना था 1 वर्ष धीरे-धीरे बीतता चला गया और पिताजी जो भी रोजाना पैसे कमा कर लाते उन पैसों से पिताजी शराब-जूआ आदि में बर्बाद कर देते। ऐसे धीरे-धीरे लोन चुकाने का समय नजदीक आ गया और हम लोन पूरा नहीं चूका पाए परिणामतः घर पर कब्जा हो गया और फिर हम किराए के घर में रहने लगे। पिताजी के हालात वैसी की वैसी ही रही और धीरे-धीरे किराए का भी कर्ज बढ़ता चला गया, फिर पिताजी को माताजी ने काफी समझाया और आसपास के तांत्रिक से दारू छुड़वाने की दवाई चलवाई जिसके कारण कुछ दिन बाद पिताजी ने दारु पीना बंद कर दिया और फिर पिताजी दिल्ली कामकाज करने के लिए आ गए। पिताजी जो कामकाज करके पैसा कमाते उसमें से कुछ पैसा गांव में कर्ज चुकाने के लिए भेज देते थे और इधर गांव में माताजी दूसरों के घर पर बेलदारी का कामकाज करने के लिए जाती एवं हम

गांव में सरकारी स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने के लिए भी जाते थे। हमने वहां के विद्यालय से चौथी कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर ली थी। गांव का माहौल ठीक था वहां सबके घर थे और सब बच्चे अच्छे-अच्छे कपड़े, अच्छी-अच्छी चीज पहना और खाया करते थे परंतु माताजी जो कामकाज करती थी उन पैसों से गुजारा नहीं हो पाता था इसलिए पिताजी ने माताजी और हमको दिल्ली बुला लिया और इस तरह हम दिल्ली में रहने लगे। दिल्ली में आकर माताजी और पिताजी अच्छे से कार्य करने लगे और धीरे-धीरे जो पैसा कमाते उन पैसों को गांव में कर्ज चुकाने के लिए भेजते थे। गांव से आने के बाद हमारा स्कूल जाना बंद हो गया था, हमने देखा कि हमारी बस्ती के नजदीक एक सामाजिक कार्यकर्ता एक संस्था से आती है तो हमने उनसे मुलाकात की और फिर उन्होंने हमें अपने बारे में अर्थात चेतना संस्था के बारे में बताया और हमें अपने वैकल्पिक शिक्षा केंद्र से जोड़ लिया और इस तरह हम रोजाना यहाँ पढ़ने के लिए आने लगे। इधर माता-पिता जो कामकाज करके पैसा कमाते वह पैसा जोड़कर कर्ज चुकाने के लिए गांव में भेज दिया करते थे जिस कारण हम उनसे कुछ भी चीज खरीदने के लिए कहते तो पिताजी शर्म के मारे नजर झुका लेते। आसपास के बच्चे तरह-तरह के खिलौने से खेल खेलते और उन्हें देखकर हमारा भी मन करता परंतु हम भी खामोश रह जाते, इस कारण हम जब शिक्षा केंद्र पर आते तो कागज के गत्तों से ही खिलौने आदि बनाते और उन्ही खिलौनों से खेल कर खुश होते।

बालिका को मिला अपनी मेहनत का फल, परीक्षा में हुई सफलतापूर्वक पास

बातूनी रिपोर्टर सानिया व रिपोर्टर किशन

कहते हैं की यदि जब हमें कहीं से भी, कैसी भी या थोड़ी सी भी सहायता मिलना आरम्भ हो जाती है तो हम उस सहायता पर आश्रित होकर उस कार्य को मन से नहीं करते और उसे आसान समझ लेते हैं। हम बात कर रहे हैं स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों की जिनको सरकार की तरफ से रियायत थी की आठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने वाले बच्चों को फेल नहीं किया जाएगा परंतु जब यह योजना बदली तो असलियत सामने आई कि ये बच्चे वास्तव में अच्छे से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं या नहीं? इसी बात को जानने के लिए बालकनामा के पत्रकार दिल्ली के जखीरा में रहने वाले सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मिले तो तब उक्त बात को विस्तार से जाना। बस्ती में रहने वाली 14 वर्ष की बालिका ने पत्रकारों को बताया कि हम इस स्थान पर लगभग 7 वर्षों से अपने माता-पिता के साथ रह रहे हैं। हम वर्तमान में 9वी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं एवं हमने मार्च 2024 में आठवीं कक्षा की परीक्षा दी है। यह बात तो आप भी पहले से ही जानते होंगे कि सरकार की तरफ से यह योजना जारी थी कि आठवीं कक्षा तक कोई भी बच्चा परीक्षा में फेल नहीं होना चाहिए परंतु यह योजना कुछ ही वर्ष तक रही और अंततः वह योजना इस वर्ष बदल गई। जब हम आठवीं कक्षा में थे और परीक्षा का समय नजदीक आने वाला था तब स्कूल के शिक्षिकों ने यह जानकारी सभी बच्चों तक पहुंचा दी थी कि सभी बच्चे अच्छे से पढ़ाई करें और यदि आठवीं कक्षा में फेल हो गए तो अब सरकार की तरफ से पास होने के लाभ नहीं है। यह बात सुनने के बाद कुछ ही बच्चों ने इसे महत्वपूर्ण

समझा और अधिकांश बच्चे इस बात को मजाक में ले गए। जब यह बात हमने अपनी माता जी को बताई तो माताजी ने कहा की यदि तुम शिक्षा में फेल हो गई तो तुम्हारा स्कूल से नाम कटवा दिया जाएगा परन्तु मुझे आगे भी शिक्षा प्राप्त करनी है इस कारण अध्यापक, अध्यापिका और माता जी की बात को और महत्वपूर्ण मानकर हमने पूरे दिन-रात मेहनत की और आठवीं कक्षा की परीक्षा दी। जिस दिन परीक्षा होती उस दिन हमारा मन काफी घबराता था और हम अपने मित्रों से भी कहते थे कि आप परीक्षा में पास हो जाना तो सहेलियां कहती की तुम टेंशन मत लो मैं सब कुछ याद कर के आई हूँ और मैं पास हो जाऊंगी। जब परीक्षा खत्म हुई और परीक्षा के बाद जब परिणाम आया तो ज्ञात हुआ की आठवीं कक्षा में लगभग 20 बच्चों से भी अधिक बच्चे परीक्षा में पास नहीं हो पाए और वह उसी कक्षा में रह गए परंतु हम आठवीं कक्षा में पास हो गए। यह परीक्षा 600 अंक की थी जिसमें से हमने 320 अंक प्राप्त किए और यह अंक प्राप्त करके हम काफी खुश हुए। हमें यह सोचकर दुख नहीं है कि हम फर्स्ट, सेकंड, नहीं आए परंतु पास हो गए इस बात की बेहद खुशी है क्योंकि हमारी कक्षा में कुछ बच्चे बहादुर भी थे जो कक्षा में सबसे आगे बैठा करते थे और हम पीछे बैठा करते थे। जब परीक्षा में पास हुए तो हमने अपनी सहेली से बात की हालाँकि वह परीक्षा में फेल हो गई थी और वह काफी नाराज भी हुई। परंतु इतना ही नहीं, बच्चों की कंपार्टमेंट भी आई जिस दौरान उन बच्चों को दोबारा परीक्षा देने का मौका मिला परंतु वह कंपार्टमेंट आने के बाद भी पास नहीं हो पाए। हमने अपने पास होने की खबर अपनी माता जी को बताई तो माताजी काफी खुश हुई और हमने माताजी से सवाल किया कि क्या अब आप हमें स्कूल से हटा देंगे? तो माताजी ने कहा, नहीं हमने वो बात आपके भले के लिए ही कही थी ताकि आप अच्छे से परीक्षा में मेहनत करें और पास हो जाए।

बरसात से प्रभावित, सड़क और कामकाजी बच्चे कई दिनों तक भूखे

पृष्ठ 1 का शेष

बारिश आई की बारिश का पानी झुग्गी के अंदर भर गया और इस कारण घर में जितना भी सामान था वह सब भी भीग गया और खाने का सामान आदि जैसे आटा, चावल, दाल एवं सब्जी आदि सब पानी में भीग गया और खराब हो गया घर के अंदर घुटनों तक पानी आ पहुंचा इसलिए हमने पानी को गिलास एवं मग के द्वारा बाहर निकाला। इतना ही नहीं बारिश होने के कारण घर के सभी सदस्यों ने तीन दिन तक भोजन नहीं किया और पिताजी को जो लोग मंदिर पर कुछ नमकीन एवं बिस्किट आदि देकर गए तब जाकर एवं हमारे द्वारा दूसरों के घरों से मांग-मांग कर भोजन प्राप्त किया गया। जयपुर में रह रहे 15 वर्ष के गौतम (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जब अधिक बारिश आती है तो बारिश में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अमूमन समस्या यह भी होती है कि जब लगातार बारिश होती रहती है तो काम पर जाना बहुत मुश्किल हो जाता है। पूरे दिन में जितने का माता-पिता काम करते हैं, वह घर में खर्च हो जाता है और ऐसी भी नौबत आ जाती है कि जब तक काम काज पर नहीं जाते तब तक आस पड़ोस से कुछ मांगकर या उधार लेकर खर्चा चलाना पड़ता है। जब बारिश का माहौल कम हो जाता है तब जाकर कही फिर से कामकाज मिलता है। गुरुग्राम की बस्ती में रह रहे 11 वर्ष के सुमित (परिवर्तित नाम) ने बताया की हम पिछले 7 सालों से वजीराबाद के पीछे वाली बस्तियों में रह रहे है। हम मूल रूप से बंगाल के रहने वाले है, हमारे घर में पांच सदस्य हैं। मेरे पिताजी हाउसकीपिंग का काम करते हैं और माता जी दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम करती है। सुमित ने बताया कि बारिश में हमें बहुत ही ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ता है क्योंकि जब बारिश आती है तो हमें स्कूल जाने में बहुत समस्याएँ आती है। जैसे कभी-कभी होता है कि जब हम स्कूल जाते हैं तो बारिश रास्ते में हो जाती है और कहीं रुकने की जगह नहीं मिलती, जिस कारण कॉपी-किताब भीग जाते हैं और ऐसे में कॉपी-किताब फटने का भी डर रहता है अतः शिक्षा प्राप्त करने में भी परेशानी होती है। जब अधिक बारिश होती है और घरों में पानी भर जाता है तो बच्चे किस प्रकार से सोते हैं? इस पर प्रकाश डालते हुए दिल्ली के शिवाजी पार्क के नजदीक झुग्गी बस्तियों में रहने वाले प्रियांशु (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वर्तमान में बारिश अक्सर हो रही है। बारिश होने के कारण घरों में पानी भर जाता है, पानी भर जाने के कारण सोने और पहनने के कपड़े आदि भीग जाते हैं जिस कारण घर के अंदर सोने में बहुत दिक्कत आती है। हमारा कबाड़े का कामकाज है और जब अधिक बारिश हो जाती है और घरों के अंदर सोने की व्यवस्था नहीं रहती तो हमें गीले बिस्तरों को कबाड़े के ढेर के ऊपर डालकर सोना पड़ता है। इतना ही नहीं जिनके पास ढेर सारा कबाड़ा नहीं है तो वह अपने रिक्शे के ऊपर सोते हैं परंतु वह रिक्शा इतना छोटा होता है कि हम बच्चे उस रिक्शा पर नहीं सो पाते हैं। जब उस रिक्शे के ऊपर सोते भी है तो शरीर एवं पैर दर्द करने लगते हैं क्योंकि उस पर ना तो पैर सीधे हो पाते है और ना ही शरीर। इस कारण ये बारिश भरी रातें हमारे लिए काफी मुसीबत भरी होती है जो हमारी विपरीत परिस्थितियों एवं दैनिक जीवन को और कठिन बना देती है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

माता-पिता के अभाव में क्या बालक कर पाएगा अपने सपने को साकार ?

बालक नाम रिपोर्टर: काजल,
बातूनी रिपोर्टर: स्नेहा

जब हमारे बालकनामा पत्रकार ने एमार टावर (बादशाहपुर, गुरुग्राम) समुदाय का दौरा किया तो वहां की रिपोर्टर खुशबू ने बताया कि हमारे यहां परवीन (परवर्तित नाम) नाम का बालक रहता है जिसकी आयु 11 वर्ष है। बालक से मिलने पर उसने बताया की मेरी माताजी कुछ सालों से अनेक बीमारियों से ग्रसित थी एवं मेरे पिताजी शराब के आदि थे। दुर्भाग्यपूर्ण एक दिन मेरी माताजी बीमारी के कारण मर गई और मेरे पिताजी भी मुझे छोड़ कर कहीं चले गए। इस घटना के बाद मेरी परवरिश मेरे नाना ने की, अब मैं अपने नाना के साथ रहता हूं। मेरे नाना के पास पैसे ना होने के कारण वो मेरा स्कूल दाखिला नहीं करवा रहे हैं, हालाँकि विद्यालय जाने का मेरा भी मन करता है और मैं भी पढ़ना चाहता हूं पर दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि ना तो मेरी माताजी है और ना ही मेरे पिताजी है और मेरे नाना बहुत गरीब है उन्हें भी यदा-कदा मजदूरी का काम मिलता है तो मेरे नाना जी करने चले जाते हैं अन्यथा हालत दयनीय ही

है जिसके कारण एक तो वैसे ही हमारा घर का खर्चा बड़ी मुश्किल से चलता है और यदि इसमें पढ़ाई-लिखाई का खर्चा और होगा तो वो सब कहां से आएगा? अतः परवीन इन समस्याओं के कारण विद्यालय पढ़ने नहीं जा सकता है। परवीन की स्थिति बहुत खराब है जब हमने उसे संस्था के बारे में बताया की चेतना संस्था में हम उन बच्चों को पढ़ाते हैं जो बच्चे सड़क एवं कामकाजी बच्चे होते हैं। हमारी चेतना संस्था की तरफ से विद्यालय में दाखिला करवाने में सहयोग किया जाता है इन सब बात को सुनकर परवीन बहुत खुश हुआ और इस प्रकार परवीन अब हमारे चेतना का लाभार्थी बन गया जिसके कारण परवीन को बहुत खुशी हुई कि अब मैं भी अपने सपने पूरे कर सकता हूँ। खुशबू को भी अत्यधिक खुशी हुई की मेरी वजह से किसी को स्कूल जाने का मौका मिलेगा। खुशबू कहती है की, परवीन की दयनीय स्थिति देखकर मुझे बहुत ही बुरा लगा था लेकिन परवीन अब चेतना संस्था से जुड़कर बहुत खुश है और शीघ्र ही उसका दाखिला बादशाहपुर की सरकारी स्कूल में करवा दिया जाएगा ताकि उसके स्कूल जाने के सपने को साकार किया जा सके।

बच्चों ने घर के आंगन में शुरू किया कबाड़ छंटाई का काम

बालकनामा रिपोर्टर: काजल
बातूनी रिपोर्टर: आरुषि

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की विभिन्न बस्तियों का दौरा किया और मांग्यावास कच्ची बस्ती में बनी झुग्गियों के आगे कबाड़ का ढेर देखा तो आसपास मौजूद बच्चों से जानकारी लेने के लिए उनसे बातचीत की। बच्चों ने बताया की, इस बस्ती में वाल्मीकि समुदाय निवास करता है और वह कबाड़ा इकट्ठा करने का काम करता है, इसलिए सभी झुग्गियों के आगे कबाड़ा इकट्ठा मिलता है। 11 वर्षीय बालिका आरु (परिवर्तित नाम) ने बताया की अभी हमने घर में कबाड़ छांटने का काम शुरू कर दिया है। जब रिपोर्टर ने बालिका के साथ विस्तार से जानकारी लेने के लिए चर्चा की तो बालिका ने बताया की, मेरे माता-पिता पहले स्कूल में साफ-सफाई का कार्य करते थे लेकिन कुछ दिनों पहले मेरे छोटे भाई की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हुई और उसे लगभग 15 दिन अस्पताल में भर्ती करवाना पड़ा इस चक्कर में भाई की देखभाल के कारण माता-पिता का काम भी छूट गया और अब मेरे पिता को एक नया काम मिला हैं जिसमें वह स्वच्छ भारत अभियान की गाड़ी से घर-घर से कचरा एकत्रित करने का काम करते है। इस काम के बदले उन्हें 8000 रुपए महीने के मिलते हैं, इतने कम पैसों में घर खर्च करना या चलाना बहुत ही मुश्किल है इसलिए मेरे पिताजी गाड़ी में सूखा कचरा भरकर घर ले आते हैं और हम परिवार के सभी लोग मिलकर उस कचरे में से प्लास्टिक, कांच,लोहा इत्यादि सामान अलग-अलग करते हैं तथा घर के आंगन में ही तिरपाल के नीचे हम यह सब करते हैं। हमें कभी-कभी इतनी तेज धूप लगती है लेकिन क्या करें? मजबूरी में करना पड़ता है, इस काम की सहायता से हमको महीने में लगभग 2000 से 3000 रुपए की आय हो जाती हैं। हालाँकि, इन सबके बावजूद भी हमारा गुजारा बड़ी मुश्किल से चलता है। छोटे भाई तथा बुजुर्ग दादा-दादी की भी दवाइयां चलती है, इन सब की वजह से ही मेरे पिताजी को सुबह से शाम तक काम करना पड़ता है और हमें भी धूप में काम करना पड़ता हैं। बालिका कहती है की घर की जिम्मेदारियां होने के कारण मैं पढ़ाई भी नहीं कर पाती हूँ।

पिता के पैर टूटने के कारण चाय की दुकान पर काम करने को मजबूर बचपन

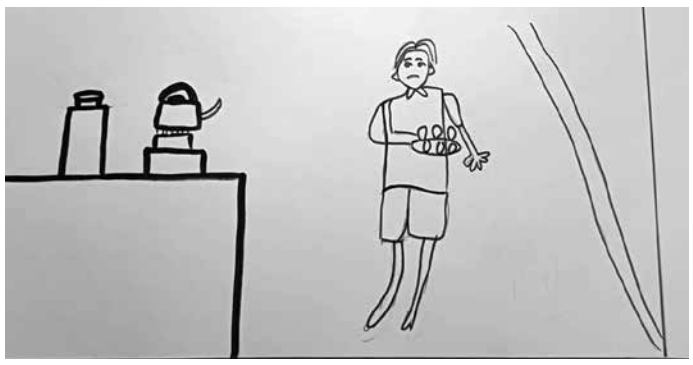

बालकनामा रिपोर्टर: काजल
बातूनी रिपोर्टर: अजय

बाल मजदूरी बच्चों से स्कूल जाने का अधिकार छीन लेती है और वे पीढ़ी दर पीढ़ी गरीबी के दुष्चक्र से बाहर नहीं निकल पाते हैं। वास्तव में बाल मजदूरी शिक्षा में बहुत बड़ी रुकावट है। जब बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जयपुर की जयसिंहपुरा खोर बस्ती का दौरा किया तो उन्हें एक ऐसी ही खबर के बारे में जानकारी मिली। जब रिपोर्टर ने एक बालक को बस्ती के बाहर चल रही चाय की दुकान से चाय के गिलास और केतली ले जाते हुए देखा तब रिपोर्टर ने बालक से जानकारी लेने का प्रयास किया तो 11 वर्षीय बालक जय (परिवर्तित नाम) ने बताया की लगभग 6 महीने पहले मेरे पिताजी के पैर में फैक्चर हुआ था परन्तु पैर की उचित देखभाल न होने के कारण वह अभी तक ठीक नहीं हुआ और मेरी मां भीख मांग कर जो पैसे लाती है उससे घर का गुजारा नहीं हो पाता इसलिए मैंने पढ़ाई छोड़कर यह काम करना शुरू किया है। मैं सुबह 8:00 बजे से लेकर शाम के 7:00 बजे तक चाय की दुकान पर ग्राहक को चाय पकड़ाने, चाय बनाने और गिलास धोने का काम करता हूं। इस काम के बदले मुझे प्रतिदिन के 100 रुपए मिलते है। इस काम के अतिरिक्त चाय की दुकान से लगभग 500 मीटर की दूरी पर जो अन्य दुकान वाले हैं उनको चाय देने जाता हूँ और वह सब मुझे छोटू चाय वाले के नाम से बुलाते हैं। बालक बताता है कि, उसे बहुत काम करना है और बहुत पैसे कमाना है ताकि पिताजी का इलाज करवा सके और घर में जरुरत के अन्य सामान ला सके।

बच्चों ने साझा की व्यथा : कचरा बीनते वक्त दुर्घटनाओं से बचने के लिए बहादुरी जरूरी है

ब्यूरो रिपोर्ट

क्या आप जानते हो कि सड़कों पर जब ये सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने विभिन्न प्रकार के कामों में संलग्न रहते हैं तो उन्हें आसपास की वस्तु, जानवर और अन्य लोगों के कारन अनेक समस्याओं से रोजाना जूझना पड़ता है। हालाँकि तब भी सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने कार्यों को करने में लगे रहते हैं। बालकनामा पत्रकार दिल्ली के कुछ इलाकों में दौरा करने के दौरान घूम रहे थे तब पत्रकारों की नजर कबाड़ा बीनने का कामकाज कर रही 16 वर्ष की एक बालिका पर पड़ी तो पत्रकारों ने उस बालिका से बात की और जाना की कार्य करने में उन्हें किन-किन समस्याओं से जूझना पड़ रहा है? तो बालिका ने बताया की हम अपने घर से सुबह 7:00 बजे से निकल आते हैं और शाम के 5:00 बजे घर पहुंचते हैं। हमें यह अंदाजा नहीं रहता कि हम अपने घर से कितने किलोमीटर दूरी पर कबाड़ा बीनने के लिए आ गए हैं। हमें कई प्रकार का कबाड़ा मिल जाता है जैसे गत्ता, प्लास्टिक, थमाकौल, शराब की कांच की बोतल आदि। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि पूरा दिन बीत जाता है और कबाड़ा नहीं मिल पाता है जिस कारण निराश होकर वापस घर भी जाना पड़ता है। समस्याओं का आलम ये है कि जब हम सड़कों पर कबाड़ा बीनने का कामकाज कर रहे होते हैं तब अनेक लोग हमें परेशान करते हैं। हम रोजाना एक स्थान के पार्क पर कबाड़ा बीनने के लिए जाते हैं उस पार्क में कबाड़ा

बीनने का मतलब यह है कि उस पार्क में अधिकतर लोग शराब पीते हैं और वह दारू की कांच की बोतल, पानी की बोतल, गिलास आदि पार्क में फेंक कर चले जाते हैं। जब हम उन कबाड़े को उस पार्क में उठाने जाते हैं तो अधिकतर नशेड़ी लोग उस पार्क में बैठकर नशा कर रहे होते हैं और वह हमें बोतल देने के बहाने बुलाते है और अश्लील बातें करते हैऔर कहते कि पैसा ले लो और जैसा हम कहें वैसा करो एवं अश्लील हरकतें करने के लिए कहते हैं। हम बिना कुछ कहे चुपचाप वहां से निकल जाते हैं, हम किसी से इसलिए कुछ नहीं कहते की यदि हम कुछ कहेंगे तो हमारे साथ जबरदस्ती करने लगते हैं इस कारण उस समय हमारे लिए तो जान बचाना भी मुश्किल हो जाता है। हम बच्चों को ऐसी समस्याओं से रोजाना जूझना पड़ता है और बहादुरी से काम लेना पड़ता है।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

लैंगिक भेदभाव के चलते बालिकाएं हो रही शिक्षा से वंचित

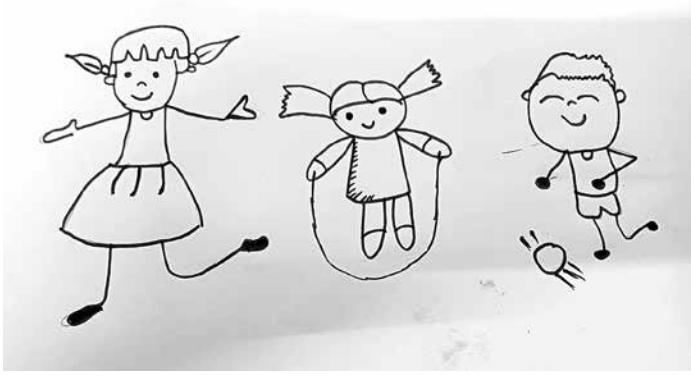

बालकनामा रिपोर्टरः काजल
बातूनी रिपोर्टरः राधिका

बालकनामा रिपोर्टर काजल ने जब जयपुर की मांग्यावास कच्ची बस्ती के पास ही गणपति नगर में विजिट तो की तो कुछ बच्चे समूह बनाकर आपस में खेलते हुए नजर आए तब रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि अब तो गर्मियों की छुट्टियां खत्म हो गई है और स्कूल भी खुल गए हैं तो आज आप स्कूल क्यों नहीं गए? तब 13 वर्षीय बालिका राधा (परिवर्तित नाम) ने बताया की मेरे माता-पिता मुझे स्कूल नहीं भेजते हैं उनका मानना है कि अब मैं बड़ी हो गई हूँ इसलिए स्कूल जाना ठीक नहीं है। रिपोर्टर काजल ने जब पास की झुग्गियों में काम कर रहे राधा के माता-पिता से पूछा कि आप अपनी बच्ची को स्कूल क्यों नहीं भेजते हो? तब उन्होंने बताया कि हमारे समाज में लड़कों को तो पढ़ाते हैं लेकिन लड़कियों को पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता, उनका यह तर्क था की लड़कियों की पढ़ाई हमारे किसी काम की नहीं होती क्योंकि इनको दूसरे घर जाना होता है और जिस समय में यह स्कूल पढ़ने जाएगी उतने समय में घर में रहकर काम में हमारा सहयोग करेगी। हमारे यहां छोटी बालिकाएं भीख मांगने का काम करती है और बड़ी लड़कियों से घर में कबाड़ छँटाई का काम या हमारे साथ मजदूरी करने ले जाते है, जिससे हमारे पास पैसा आएगा। बालकनामा रिपोर्टर काजल ने राधा के माता-पिता को समझाया और बालिका राधा को भी स्कूल भेजने के लिए प्रेरित किया लेकिन राधा के अभिभावकों ने रिपोर्टर की बात नहीं सुनी और अंत में राधा ने बहुत ही उदासीनता से बताया की हमारे यहां लड़के और लड़कियों को लेकर ऐसा ही भेदभाव चलता हैं।

वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर जुड़ने के बाद मिली बालिका को एक नई पहचान

बातूनी रिपोर्टर ताबीज व रिपोर्टर किशन

हमें तरह-तरह की चीजें देखना और अलग-अलग स्थानों पर घूमने के बाद खुशी प्राप्त होती है इसी प्रकार सड़क एवं कामकाजी बच्चों के भी कई ऐसे कारण है जिनसे उन्हें खुशी प्राप्त होती है। जब दिल्ली में पत्रकार एजुकेशन क्लब पर बच्चों के साथ मीटिंग कर रहे थे तो इसी बीच उन्होंने बच्चों से जानने का प्रयास किया कि उन्हें क्या पाकर खुशी मिलती है? तब जाकर 13 वर्ष बालक ने बताया मेरा नाम दिलीप (परिवर्तित नाम) है। हम दिल्ली में 8 वर्ष से अपने माता-पिता के साथ झुग्गी बस्ती रह रहे हैं। गांव में ज्यादा कामकाज एवं आमदनी नहीं थी और घर का गुजारा भी नहीं हो पाता था तो इस कारण पिताजी हमें दिल्ली लेकर आ गए। पिताजी फैक्ट्री में और माताजी बिल्डिंगों में साफ-सफाई करने का कार्य करने के लिए रोजाना जाते हैं। जब हम गांव में रहा करते थे तो हम गांव में सरकारी स्कूल में रोजाना स्कूल जाते थे और उस समय हम तीसरी कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे परंतु जब से हम दिल्ली आ गए तो हमारी शिक्षा छूट गई और स्कूल जाना बंद हो गया। दिल्ली में आकर झुग्गी बस्ती में दो वर्ष बिना शिक्षा प्राप्त किए यूँ ही निकल गए, फिर एक दिन हमारे मन में विचार आया कि शायद ही हम अब आगे पढ़ पाएंगे? हमने हिम्मत की और पिताजी को स्कूल में दाखिला करवाने के लिए कहा तो पिताजी ने कहा कि कुछ दिन रुको फिर आसपास में स्कूल देखकर तुम्हारा दाखिला करवा देंगे। एक दिन हम अपनी बस्ती से लगभग 500 मीटर की दूरी पर घूमने के लिए गए थे तो हमें पता चला कि यहां पर उन बच्चों को पढ़ाया जाता है जो बच्चे स्कूल नहीं जा पाते तो हम भी शिक्षा केंद्र पर पहुंचे और वहां सामाजिक कार्यकर्ता से मुलाकात की और अपनी कहानी बताई। सामाजिक कार्यकर्ता ने हमारी कहानी को सुनकर हमें उनके वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर जोड़ लिया और फिर हम रोजाना वहाँ पर पढ़ने के लिए आने लगे। जब हम वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर रोजाना पढ़ने के लिए आते और हम विषय जैसे हिंदी या इंग्लिश पढ़ते तो हम वह पढ़ ही नहीं पाते थे क्योंकि 2 वर्ष से अधिक हमने किताब पर ध्यान ही नहीं दिया और पढ़ना लिखना भी लगभग भूल गए थे। फिर धीरे-धीरे वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर आकर हम सीखने लगे, हमें हिंदी एवं इंग्लिश लिखना धीरे-धीरे आने लगा और हम काफी खुश हुए फिर कुछ महीनो बाद वैकल्पिक शिक्षा केंद्र की सामाजिक कार्यकर्ता ने हमारी परीक्षा ली और हम कितना पढ़ पा रहे हैं और कितना सीख गए यह पता किया। जब हमने परीक्षा दी तो ज्ञात हुआ की उसमें हमें काफी चीज आने लगी है फिर कार्यकर्ता ने हमारा पास के स्कूल में तीसरी कक्षा में दाखिला करवा दिया और अब हम काफी खुश है की अंततः हमारा स्कूल में दाखिला हो ही गया। वर्तमान में मैं सुबह के 9:30 बजे से 12:00 बजे तक वैकल्पिक शिक्षा केंद्र पर पढ़ने के लिए जाती हूँ और दोपहर के 12:30 बजे से शाम के 6 बजे तक रोजाना स्कूल जाती हूँ और अब मैं काफी खुश हूँ कि हम शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

बचपन की बुरी संगत ने बालक को नशे की आदत और कैंसर का शिकार

बातूनी रिपोर्टर नैना व रिपोर्टर किशन

हम अपने आसपास कई बच्चों को नशा करते हुए अवश्य देखते हैं। जब बालकनामा पत्रकार नोएडा की कुछ झुग्गी बस्तियों में पहुंचे तो यह जानने का प्रयास किया कि गर्मी की छुट्टियों में बच्चे क्या कर रहे हैं? कहते हैं संगति का असर जरूर पड़ता है जैसी संगति करेंगे वैसा ही असर हमें देखने के लिए मिलता है। पत्रकारों द्वारा बात करने के दौरान पता चला कि गर्मी की छुट्टियों में अधिकतर बच्चे बुरी संगति में रहकर जो पहले कभी नशा नहीं करते थे अब वह भी नशे की ओर अग्रसर हुए हैं। बस्ती में रह रही 16 वर्ष की बालिका ने बताया की बस्ती में अधिकांश बच्चे नशे की और रोजाना बढ़ते जा रहे हैं। कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो पहले नशा नहीं करते थे और वह स्कूल जाया करते थे परन्तु गर्मियों की छुट्टियों में खाली घूमते रहने और गलत दोस्तों के साथ रहकर नशा करते तो वह बच्चे भी नशा करने लग जाते। माता-पिता अधिकतर बच्चों को रोजाना चीज खाने के लिए पैसे दिया करते हैं परंतु अधिकतर बच्चे उन पैसों को लेकर आसपास में रहने वाले बच्चों के साथ उन पैसों से ताश का जुआ, गुच्ची वाला खेल आदि खेलने लग जाते और कुछ पैसे जीतकर उन पैसों से नशा खरीदने, नशा जैसे गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू आदि यह खरीद कर इसका सेवन करते। इधर अधिकांश माता-पिता यही नहीं जानना चाहते कि हमारे बच्चे क्या सही और क्या गलत कर रहे हैं? बात करने के दौरान बालिका ने यह भी बताया कि, हमारी बस्ती में अधिकतर माता-पिता खुद इन मादक पदार्थों का सेवन करते हैं और साथ ही साथ अपने बच्चों को भी नशा करने के लिए देते हैं। जब कभी बच्चों को नशा नहीं मिलता तो बच्चे अपने माता-पिता के खिलाफ गंदी-गंदी गालियों का प्रयोग करते हैं अंततः अभिभावक फिर खुद पैसे देकर दुकान से नशीले पदार्थ मंगाकर उन्हें खिलाते हैं। बालिका ने बताया कि हमारी बस्ती के बगल में एक 16 वर्ष का बालक रहता है, वर्तमान में वह कैंसर की बीमारी से जूझ रहा है। यह बीमारी होने से पहले यह माता-पिता को बिना बताए अधिकांशतः सिगरेट, गुटखा आदि का नशा करता था परंतु जब हम कभी देख लेते तो उनके माता-पिता को बताते, तो माता-पिता विश्वास ही नहीं करते थे और वह सोचते की शायद ये ही झूठ बोल रहे हैं। अधिकतर बच्चे बस्तियों में जब नशा करते हैं और माता-पिता यकीन नहीं मानते तो और वो सोचते की ये बच्चे हमारे बच्चों को पिटवाने के लिए झूठ बोल रहे हैं। जब माता-पिता को पता चला कि हमारा बालक नशे के कारण कैंसर की बीमारी से जूझ रहा है तब जाकर उन्हें यकीन आया। हम बच्चों का यह कहना है कि अधिकतर माता-पिता अपने में इतना गुम ना हो जाए कि बच्चों का ख्याल ही ना कर पाए क्योंकि ऐसा किसी के साथ भी ऐसा हो सकता है।

पानी की कमी से बच्चों को शौचालय में समस्याओं का सामना

बातूनी रिपोर्टर भावना व रिपोर्टर किशन

लड़के तो अक्सर विभिन्न समस्याओं को झेल लेते हैं परंतु इनसे भी अधिक परेशानियों का सामना लड़कियों को करना पड़ता है। दिल्ली की एक ऐसी बस्ती में पत्रकार पहुंचे जहां पर झुग्गी बस्ती के अधिकांश बच्चे एवं बड़े व्यक्ति सरकारी शौचालय में शौच करने के लिए जाते हैं। कभी-कभी इन शौचालयों में ऐसी परेशानियों का सामना करना पड़ता है कि इन शौचालयों में जाना मुश्किल हो जाता है तो उस मुसीबत का बस्ती में रहने वाले बच्चे किस प्रकार से सामना करते हैं आइये जानते है। बस्ती में रहने वाले कुछ बच्चों से बात करने के दौरान बच्चों ने कहा की, इस बस्ती में जितनी भी बस्ती की अलग-अलग झुग्गी नजर आ रही उनमें से अधिकांश झुग्गी के लोगों के घरों में शौचालय नहीं है इसलिए बस्ती के लोग सरकारी शौचालय में शौच करने के लिए जाते हैं। इस स्थान का पानी भी खारा है जिसके कारण प्रत्येक हफ्ते दो हफ्ते में मोटर खराब हो जाती है क्योंकि उस मोटर के कोनों में नमक जम जाता है और मोटर जंग खाने लगती है और नमक मोटर के अंदर भी जम जाती है, जिस कारण मोटर खराब होने का खतरा रहता है और कभी-कभी मोटर से जुड़े हुए तार भी शार्ट-सर्किट हो जाते हैं जिसके कारण मोटर खराब हो जाती है। मोटर खराब होने के बाद मोटर को सही करवाने के लिए 3 दिन से अधिक लग जाते हैं और इतने दिन तक शौचालय में पानी नहीं आता है फलतः बच्चों को शौचालय जाने में अमूमन समस्याओं का सामना करना ही पड़ता है। इसके अलावा अधिकतर लोग शौचालय को गंदा करके चले जाते है और शौचालय में पानी नहीं डालते जिस कारण शौचालय में जाने का मन नहीं करता। बस्ती से लगभग 600 मीटर की दूरी पर एक शौचालय मौजूद है परन्तु उस शौचालय के नजदीक शराब का ठेका भी स्थित है और अधिकतर नशेड़ी लोग वहाँ शराब पीकर उधर ही ऊंघते रहते हैं और कई मनचले लड़कियों को देखकर गलत बातें बोलने लगते है इस कारण बच्चे उस शौचालय में जाने से कतराते हैं। बच्चे उस शौचालय में जब ही जाते हैं जब उनके साथ उनके घर का कोई बड़ा सदस्य जाता है वरना उस गंदे शौचालय में शौच करना ही उनकी मजबूरी हो जाती हैं।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

घर की जिम्मेदारियों से बच्चों की शिक्षा प्रभावित

बातूनी रिपोर्टर अंजलि व रिपोर्टर किशन

अनेक सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपने घर के घरेलू कामकाजों में उपस्थित रहते हैं। गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों को विद्यालय की तरफ से भी ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान कुछ गृहकार्य करने को मिलता है। अनेक स्थानों पर पहुंचकर पत्रकारों ने बच्चों से यह जानने का प्रयास किया कि इन सड़क एवं कामकाजी बच्चों को विद्यालय की तरफ से जो कार्य मिला है क्या वह बच्चों ने उसे किया भी है या नहीं? यदि नहीं भी किया तो इसके क्या कारण है? पत्रकारों द्वारा नोएडा के सेक्टर 61 के नजदीक झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों से बात करने के दौरान 15 वर्ष की बालिका ने विस्तार से बताया की इस स्थान पर जितनी भी झुग्गी बस्ती मौजूद है वे परिवार अपने-अपने कार्य करने के लिए रोजाना सुबह निकल जाते हैं। अधिकतर बच्चे अपने घर के घरेलू कामकाज में उपस्थित रहते हैं, बालिका ने अपने बारे में बताते हुए कहा की मैं इस स्थान पर अपने माता जी के साथ रहती हूँ और मेरे घर में चार सदस्य हैं। एक बहन माताजी, दो भाई एवं पिताजी की मृत्यु हो चुकी है। बस्तियों के आगे कुछ फैक्ट्रियां मौजूद है और उन फैक्ट्री के आगे अधिकतर

लोग तरह-तरह की रेहडी लगाने का कार्य करते हैं। रेहडी जैसे गुटखा, बीड़ी, सिगरेट, पेप्सी, नमकीन, पराठे, छोले भटूरे, इत्यादि।ऐसे ही हमारी भी एक दुकान है जिस दुकान में गुटखा-बीड़ी एवं पेप्सी आदि बेचकर अपने घर का गुजारा करते हैं। हम उस दुकान को सुबह के 5:00 बजे से खोल कर रात के 9:00 बजे तक चालू रखते हैं। मैं वर्तमान में सातवीं कक्षा में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाती हूँ। गर्मियों की छुट्टियों में हमें जो कार्य करने के लिए मिला था हमने वह कार्य में से कुछ कार्य कर लिया है, परंतु अभी भी कुछ कार्य शेष रह गया है। यह कार्य पूर्ण ना करने का कारण यह है कि पूरा दिन घर के घरेलू कामकाज में ही हमारा अधिकांश समय बीत जाता है जिस कारण हम यह कार्य पूरा नहीं कर पाए। पत्रकारों ने बालिका से यह जानने का भी प्रयास किया की क्या ऐसा है कि और बच्चों ने स्कूल का कार्य नहीं किया? बालिका ने बताया हमारी बस्ती में अधिकतर ऐसे बच्चे हैं जिनके पास कोई जिम्मेदारी नहीं है और उन बच्चों के माता-पिता सुबह से कामकाज पर चले जाते हैं और वह बच्चे पूरा दिन अपने दोस्तों के साथ खेल-कूद में लगे रहते हैं और उन्हें अपने स्कूल के कार्य करने की कोई फिक्र नहीं होती है और न ही किसी के प्रति जवाबदेहिता और माता-पिता जब पूछते है तो बहाना बनाकर झूठ बोल देते कि हमने कार्य कर लिया है।

कैंची से चप्पलों को काटकर उसमें रंग भरने को मजबूर बचपन

बालकनामा रिपोर्टर- अंजलि

जैसे की आप जानते ही है की सड़क पर रहने वाले बच्चों को रोजाना समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इन कामकाजी बच्चों को अपनी रोजाना की छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है तब जाकर बच्चों को एक समय का खाना नसीब होता है। ऐसी ही मुश्किलों का सामना कर रहे सड़क और कामकाजी बच्चे जो लॉरिंस रोड पर बनी रेलवे ट्रैक की झुग्गियों में रहते है, यहां पर अधिकांश लोग बिहार के रहने वाले हैं। गांव में रोजगार न मिल पाने और परिवार की आर्थिक स्थिति खराब होने की वजह से एवं कर्ज को चुकाने के लिए गांव से दिल्ली रोजगार की तलाश में आए हुए हैं, इन बच्चों के परिवारों की स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है जिस कारण बच्चों को भी काम करना पड़ता है। लॉरिंस रोड की बनी झुग्गियों पर बच्चे ट्रेन की पटरियों के पास चप्पल को बनाने का काम करते हैं, बच्चों को फैक्ट्री से चप्पल का कच्चा माल लेकर घर पर आना पड़ता है और उसे काटकर वह चप्पल बनाते हैं। 12 चप्पल को काटने पर उन्हें 2 रुपए मिलते हैं, बच्चे चप्पल को कैंची से काटकर उसमें रंग करके और उसमें नग लगाने का कार्य करते हैं। बच्चे जब चप्पल को बनाने का कार्य करते हैं तो उन्हें बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। बच्चों को चप्पल को कैंची से काटना पड़ता है जिस दौरान

कैंची चलाते समय कई बार बच्चों का हाथ भी कट जाता है। जब बच्चे चप्पल को रंगते हैं तो उनके हाथों में वह रंग लग जाता है।चप्पल को रंगने वाले रंग से बहुत तेज बदबू आती है कई बार वह रंग बच्चों के कपड़ों और शरीर से चिपक जाता है जिस कारण बच्चों के शरीर से भी बदबू आती है और वह रंग जल्दी से छूटता भी नहीं है। बच्चे यदि आसपास में अगर कहीं जाते हैं तो बच्चों के शरीर से बदबू आती है, जिस कारण कुत्ते उन पर भौंकते हैं और आने-जाने वाले लोग भी उन्हें घूरते हैं।

बच्चे जब चप्पल का माल बनाते समय नग लगाते हैं तो उन्हें उसे कील से ठोकना पड़ता है। कई बार कील ठोकते समय बच्चों के हाथों में कील चुभ जाती है! लेकिन बच्चे यह कार्य करने के लिए मजबूर है क्योंकि बच्चों की आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है।अगर वह चप्पल का माल बनाने का कार्य नहीं करेंगे तो उन्हें एक समय का खाना भी नहीं मिल पाएगा, लॉरिंस रोड में तकरीबन 200 बच्चे इस कार्य में संलिप्त है उनमें से कुछ बच्चों के कथन निम्नलिखित हैः अली (परिवर्तित नाम) - "जब मैं चप्पल का माल बनाता हूँ तो उसकी बदबू आँख एवं नाक तक चली जाती है जिससे मुझे काफी परेशानी होती है।" राजू (परिवर्तित नाम)- "बच्चे चप्पल का माल बनाने की वजह से पढ़ाई के लिए समय भी नहीं निकाल पाते हैं।" सीमा (परिवर्तित नाम)- "मुझे चप्पल का माल बनाना अच्छा नहीं लगता लेकिन मुझे मजबूरी में यह सब कार्य करना पड़ता है।"

मां के अपंग होने की वजह से बालक को उठानी पड़ी घर की जिम्मेदारी

बातूनी रिपोर्टर शिवम, रिपोर्टर सरिता

हमारे सड़क एवं कामकाजी बच्चे बहुत मेहनती होते हैं और हर परिस्थिति में जीना जानते है। ऐसे ही आज मैं एक बालक के बारे में आप सभी को बताने जा रही हूँ ' इस बालक का नाम शिव (परिवर्तित नाम) है जो 14 वर्ष का है और मूलरूप से उत्तरप्रदेश का रहने वाला है ' शिव लगभग एक महीने पूर्व से अपने परिवार के साथ गुरुग्राम के बादशाहपुर में रहने आया है। उसने बताया कि मेरी माता जी अपगं है जो पैर से नहीं चल पाती है और पिताजी मजदूरी का काम करते हैं। मेरी एक बड़ी बहन है जो 16 वर्ष की है वह दूसरों के घरों में बच्चे खिलाने एवं उनकी देखरेख का काम करती है और हमारे घर का खर्चा चलाती है। मेरा एक बड़ा भाई है जो 21 वर्ष का है वह भी काम करता है और उसकी 6 महीने बाद शादी होने वाली है। शादी की वजह से हमने बहुत कर्जा ले रखा है, कर्जा चुकाने के लिए हम सहपरिवार काम की तलाश में गुरुग्राम रहने आए है। मैं यहाँ स्कूल भी नहीं जाता हूँ क्योंकि घर में माँ की देखभाल करनी पड़ती है, जब हम बादशाहपुर में रहने आए तो यहाँ मेरी एक दोस्त ने मुझे बताया कि हमारी चेतना संस्था में ऐसे बच्चों को पढ़ाते हैं जो स्कूल पढ़ने नहीं जा पाते या जो बच्चे सड़क एवं कामकाजी होते हैं तो शिव ने कहा कि

हम बहुत गरीब घर के है तो क्या मुझे भी चेतना संस्था पढाएगी? क्योंकि मैं पढ़ना चाहता हूँ और पढ-लिख कर आगे बढ़ना चाहता हूँ। फिर मैं ऐसे चेतना संस्था के कार्यकताओं से मिला और संस्था का लाभार्थी बन गया। मुझे यहाँ संस्था के अंतर्गत पढ़ना बहुत अच्छा लगा और मैं यहाँ मन लगाकर पढ़ता भी हूँ। जब हमारी बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने शिव से बातचीत की तो उसने बताया की, पहले से हमारी स्थिति ठीक हो रहीं है क्योंकि हमारी दीदी काम करती हैं जिससे हमारा घर का खर्चा चलता है और पापा कर्जा चुकाते हैं और मैं अब हमेशा पढ़ने जाता हूँ और भैया भी काम करता है। अतः अब मैं पढ लिख कर बड़ा आदमी बनूँगा और अपनी माँ की अच्छे से देखभाल करूंगा '

घर वाले ही बच्चों को मंदिरों पर भीख मांगने के लिए कर रहे मजबूर

बातूनी रिपोर्टर शिवम,
बालकनामा रिपोर्टर सरिता

जब हमारी बालकनामा रिपोर्टर सरिता ने एमार टावर (बादशाहपुर, गुरुग्राम) समुदाय का दौरा किया तो वहाँ एक बच्चे से बातचीत हुई है जिसका नाम शिवांश (परिवर्तित नाम) था जिसकी उम्र लगभग 10 वर्ष की थी ' शिवांश ने बताया कि हम वर्तमान में बादशाहपुर में रहते है तथा हम मूलतः उत्तर प्रदेश के रहने वाले है। हमारे घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण हम रोजगार की तलाश में बादशाहपुर रहने आए है। मेरी माता जी ने यहाँ आकर दूसरों के घरों में झाड़ू-पोछा लगाने का काम ढूंढ लिया है और पिताजी ने मजदूरी का काम शुरू कर दिया है ' गाँव से हमारे साथ हमारी नानी भी यहाँ रहने आई है क्योंकि मेरे दो छोटे भाई बहन हैं ,जिनकी देख भाल मेरी नानी जी ही करती है परंतु वह मुझे रोज नजदीकी सांई मंदिर पर बिस्कुट, नमकीन, फ्रूटी, पैसे, इत्यादि मांगने के लिए भेजती हैं ' जब मैं मंदिर नहीं जाता हूँ तो मारने लगती है, कहती है की अगर तुम मांगने नहीं जाओगे तो मैं तुम्हे बहुत मारुंगी ' यह बात मेरे माता-पिता जी को भी पता है, फिर भी मेरे माता - पिता कुछ नहीं बोलते हैं और कहते हैं की नानी की बात मान लो और चले जाओ ' इस बात से शिवांश को बहुत दुख होता है कि मुझे प्रतिदिन मंदिर पर भीख मांगने जाना पड़ता हैं' वहां बहुत लोग बहुत सी बातें करते हैं जैसे कहते हैं कि यह बच्चा भीख मांग रहा हैं, इन बच्चों

के माता-पिता नहीं है जो ये बच्चे भीख मांग रहे हैं ? लोग बहुत सी बातें कहते हैं जिससे मुझे बहुत बुरा लगता है लेकिन मेरी नानी मानती ही नहीं है और कहती है कि हर रोज जाओ और मांग के लेकर आओ। कभी-कभी तो नहीं जाने पर मेरा खाना भी बंद कर देती है लेकिन मुझे तो पढ़ने लिखने का बहुत ही शौक है, बड़े होकर मुझे फौजी बनना है इसलिए मैं पढ़ाई छोड़कर अगर मंदिरों पर मांगने जाऊंगा तो मैं फौजी कैसे बन पाऊंगा? क्या मेरा सपना कभी पूरा नहीं हो पाएगा? हालाँकि इन सब के दौरान मैं चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्र में पढ़ने जाने लगा, और यहाँ के सामाजिक कार्यकर्ता ने मेरा स्कूल में दाखिला करवाया और आज मैं चौथी कक्षा में हूँ। मैं रोज स्कूल पढ़ने जाता हूँ लेकिन जब-जब स्कूल की छुट्टी होती हैं तो मेरी नानी मुझे सांई मंदिर पर भीख मांगने भेज देती है जिससे मुझे बुरा लगता है क्योंकि मेरे स्कूल के दोस्त भी मुझे देखते हैं और कहते हैं कि तुम तो भीख मांगने जाते हो और स्कूल में भी पढ़ते हो कैसे लड़के हो तुम? तुम्हें तो हमें अपना दोस्त बनाने एवं तुम्हारे साथ रहने में भी हमें शर्म आती है। यह सब सुनकर मुझे बहुत बुरा लगता है और मेरे दोस्त कहते है कि हमारे माता-पिता भी तुम्हारे साथ रहने के लिए मना करते हैं क्योंकि तुम सांई मंदिर पर भीख मांगने जाते हो ' हमें भी इसकी लत लग सकती है इसलिए हम तुमसे कोई दोस्ती नहीं रखना चाहते हैं, ऐसी ही अनेक कटु बातें सुनकर शिवांश को बहुत बुरा लगता है।

मंदिरों पर भीख मांग कर घर खर्च चलाते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर कंचन व रिपोर्टर किशन

जब हम मंदिर पर पूजा करने के लिए जाते हैं तो अक्सर हम मंदिर के बाहर कुछ बच्चों को खड़ा हुआ जरूर देखते हैं। यह बच्चे मंदिरों पर मांगने के प्रयोजन से हमें अक्सर दिखाई पड़ते हैं। हालाँकि मंदिर पर मांगने वाले बच्चों के अनेक कारण होते हैं और इन्ही कारणों को जानने के लिए दिल्ली के एक स्थान पर जब पत्रकार ने देखा की मंदिर पर एक बालिका कुछ माँग रही है तो पत्रकार ने उससे बात की और मंदिर पर भीख मांगने का कारण जाना तो बालिका ने अपनी कहानी को बताते हुए कहा की मेरा नाम अलीका (परिवर्तित नाम) है। मैं

वर्तमान में 11 वर्ष की हूँ, मेरे घर में दो भाई, एक बहन और माता जी है। हम गरीब परिवार से हैं, छोटा भाई स्कूल जाता है, बड़ा भाई फैक्ट्री में कामकाज करने के लिए जाता है और माताजी फर्नीचर का कामकाज करने के लिए जाती है और मैं अपने घर के पास के मंदिर पर सुबह के 7:00 बजे से शाम के 9:00 बजे तक मंदिर पर भीख मांगने का काम करती हूँ। यह कार्य हम काफी बरसों से कर रहे हैं, जब पिताजी मौजूद थे हमें तब भी यह कार्य करना पड़ता था क्योंकि पिताजी की तबीयत ठीक नहीं थी और उन्हें सांस की बीमारी थी जिस कारण अब वह इस दुनिया में नहीं है।

सुबह से शाम तक हम जो भी मंदिर से पैसे, कपड़े, भोजन आदि लेकर आते है उन सभी से हमारे घर का खर्चा चलता है और जो माता जी कमाती है उन पैसों से घर के किराए में खर्च हो जाते है। मंदिर पर हमें अधिकतर उस दिन रहने में आनंद आता है जिस दिन मंदिर पर भीड़ लगी रहती है और यह भीड़ अधिकतर शनिवार और मंगलवार को लगती है। इस दिन हम रात तक मंदिर पर रुके रहते हैं क्योंकि अधिकतर लोग पूजा करने के लिए आते हैं तो कुछ ना कुछ देकर ही जाते हैं।

ऐसे ही पूरा दिन मांगते हुए कट जाता है। अब पिताजी नहीं है और इस कारण जिम्मेदारी बढ़ और गई है क्योंकि माताजी के शरीर से भी ज्यादा काम नहीं हो पाता है इस कारण मंदिर पर मांगने के लिए आना ही पड़ता है क्योंकि इन्ही सभी चीजों से घर का पालन पोषण हो पाता है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने स्वच्छता एवं सुरक्षा के लिए की अपनी आवाज बुलंद

बालकनामा रिपोर्टरः काजल, बातूनी रिपोर्टरः अनुज

जैसा कि हम सब सुनते आ रहे हैं की कचरे का निपटारा केवल यथोचित स्थानों पर ही किया जाना चाहिए न कि पार्कों, सड़कों अथवा गलियों में करना चाहिए। जैसे हर जगह कचरे के अंतिम निपटान से पहले पुनः प्रयोज्य एवं पुनर्चक्रण योग्य कचरे को अलग कर देना चाहिए ताकि कचरे की मात्रा कम हो सके लेकिन ये सब सुनने में अच्छा लगता है परन्तु जब गलियों एवं बस्तीयों में कचरा निपटान से संबंधित कोई व्यवस्था ही लागू नहीं होती तो बस्तियों का वातावरण बहुत ही दूषित हो जाता है। ऐसा ही नजारा जयपुर की कच्ची बस्ती जयसिंहपुरा खोर में देखा गया। इस क्रम में बालकनामा रिपोर्टर ने बस्ती के बच्चों से बात की तो सामने आया की बस्ती के सड़क एवं कामकाजी बच्चे अपनी सुरक्षा के प्रति जागरूक हुए और बस्ती के सभी बच्चों ने मिलकर स्थानीय पार्षद को बस्ती में एकत्रित कूड़े की समस्या से अवगत करवाया। यहां तक की मौखिक रूप से सुनवाई न करने पर सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने स्थानीय पार्षद को बस्ती की साफ - सफाई तथा स्वच्छ भारत अभियान के तहत कचरा गाड़ी नियमित रूप से बस्ती में कचरा उठाने आए, उक्त संदर्भ में बच्चों ने पत्र लिखकर शिकायत दर्ज करवाई। बस्ती के बच्चों (अनुज, जयदेव एवं साक्षी) ने बताया की कई बार स्थानीय पार्षद को इस समस्या से अवगत कराया गया है लेकिन अभी भी इस अव्यवस्था को लेकर पार्षद के द्वारा कोई कदम नहीं उठाया गया और बस्ती में कचरे की समस्या बढ़ती जा रही है। इस कचरे ढ़ेर के बीच में बच्चे खेलते हैं जो की सुरक्षा की दृष्टि से उचित नहीं है।

झूठे आरोप के कारण किशोर पर फूटा बेकाबू भीड़ का गुस्सा, बहादुर व्यक्ति ने किया बीच-बचाव

बातूनी रिपोर्टर सानिया, बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार

जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार पश्चिमी दिल्ली के अमर पार्क का दौरा करने गए तो उन्हें वहां की बातूनी रिर्पोटर सानिया ने बताया की कुछ दिन पहले वो अपनी माँ के साथ पास के ही वीरवार बाजार में गई थी तो उसने वहां एक चौंकाने वाली घटना देखी, जिसमें लगभग 15-16 वर्षीय एक लड़का गंभीर रूप से घायल हो गया। लड़के पर एक महिला का मोबाइल फोन चुराने का झूठा आरोप लगाया गया था, जिसे वास्तव में एक अज्ञात चोर ने छीन लिया था और मौके का फायदा उठाकर भाग गया था। चोर ने चालाकी से लड़के की ओर इशारा किया, जिससे भीड़ को यह विश्वास हो गया कि वह अपराधी है। लड़के ने बार-बार अपनी बेगुनाही की दलीलें दी, भीड़ से उसकी बात सुनने की भीख मांगी, लेकिन उस बेकाबू भीड़ ने एक ना सुनी और उसे बेरहमी से पीट दिया। भीड़ का क्रोध शांत नहीं हुआ और लड़के की मदद के लिए की गई चीखें अनसुनी ही रह गई। हालांकि, घटना को देखने वाले एक बहादुर व्यक्ति ने कुछ समय बाद बीच बचाव करते हुए हस्तक्षेप किया और लड़के को हिंसक भीड़ के चंगुल से बचाया। उक्त घटना के क्रम में लड़के के परिवार ने शिकायत दर्ज कराई है, और पुलिस मामले की जांच कर रही है। जिस महिला का फोन चुराया गया था, हालाँकि उसकी पहचान अभी तक नहीं हो पाई है।

ड्रॉपआउट हुए बच्चों को मिला दोबारा स्कूल जाने का मौका

बातूनी रिपोर्टर - दिलशाद

जुलाई माह में स्कूल खुलने के बाद जिन बच्चों का स्कूल में नया दाखिला करवाया गया वह अब पूरे उत्साह के साथ स्कूल जाने के लिए तैयार हैं, लेकिन कुछ बच्चें ऐसे भी हैं जो स्कूल से ड्रॉपआउट होने के पश्चात एक लंबे समय के अंतराल के बाद दोबारा स्कूल जाने का मनोबल जुटा पाए हैं। यदि लंबे समय का अंतर हो जाता है तो ड्रॉपआउट बच्चें दोबारा स्कूल जाने में हिचकिचाते हैं, जिसका कारण ड्रॉपआउट से पहले जिस कक्षा में पढ़ते थे उससे बड़ी कक्षा में जाना या उसी कक्षा में वापिस जाना, अपने दोस्तों को अगली कक्षा में देखना और खुद को शर्मिंदा महसूस करना, मजाक का पात्र बनना आदि प्रकार के अनुभव बच्चे महसूस करते हैं। इसी प्रकार का एक अनुभव साझा करते हुए उ-4, झुग्गी, केशव पुरम में रहने वाले बच्चे अमर (परिवर्तित नाम) जो 12 साल का है उसने बताया वह दिल्ली में कक्षा चौथी में पढ़ता था लेकिन बिगड़ी आर्थिक परिस्थितियों के कारण उसके पूरे परिवार को अपने गांव जाना पड़ा और 4 साल वहां रहने के बाद जब वह वापस दिल्ली आए तब उन्हें बहुत सी परेशानियों का सामना करना पड़ा। गांव से आने के बाद न उनके पास रोजगार था न ही किसी भी प्रकार की जमापूंजी इसीलिए माता-पिता के साथ अमर ने भी उनके साथ हाथ बटाना शुरू कर दिया। कुछ हालत सुधरने के बाद जब उसके माता-पिता स्कूल में दाखिला कराने गए तब तक अमर का स्कूल से नाम

काटा जा चुका था। अमर के माता-पिता ने चेतना कार्यकर्ता द्वारा अमर का नॉन-प्लान से 7वी कक्षा में दाखिला करवाया । चौथी कक्षा से सीधा 7वी कक्षा में जाना बच्चे के लिए बहुत ही मुश्किल होने वाला है लेकिन बच्चे ने बताया की वह नए उत्साह के साथ और पूरा प्रयास करेगा और इस बार अपनी पढ़ाई पूरी करेगा। बच्चों के स्कूल से ड्रॉपआउट होने का कारण गरीबी, बढ़ते हुए तनाव, शैक्षिक संसाधनों तक कम पहुंच और कम शैक्षणिक उपलब्धियों से जुड़ी हैं। कम आय वाले परिवारों के बच्चे उच्च आय वाले परिवारों की तुलना में आर्थिक परिस्थितियों के कारण अपनी पढ़ाई छोड़ देते हैं और कमाने के लिए बाहर चले जाते हैं या घर संभालने लगते हैं इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए सरकार के सर्व शिक्षा अभियान के तहत कई बच्चों को दोबारा स्कूल जाने का मौका मिला है।

बच्चे को अगवा करने की कोशिश, सूझबूझ से बचाई जान

बालकनामा रिपोर्टर- राज किशोर

हमारे बालकनामा रिपोर्टर राज किशोर ने जब निरवाना कंट्री (गुरुग्राम) के बच्चों से बात की तो एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना के बारे में ज्ञात हुआ। बातचीत के दौरान एक 12 वर्षीय बालिका निशा (परिवर्तित नाम) ने बताया कि कुछ दिन पहले यहां पर एक अंकल कार से आये थे, उन्होंने मेरे भाई को 5 रुपए दिए और उसे जबरदस्ती कार के अंदर बैठाने की कोशिश करने लगे पर मेरे भाई ने उसके हाथ पर दांतों से काट लिया और वहां से भागने की कोशिश करने लगा। यह घटना देख रही मोहल्ले की ही एक महिला ने बच्चे को बचाया और उस आदमी को फटकार लगाते हुए कहा की आप हमारे बच्चों को जबरदस्ती कार में बैठाकर कहां और क्यों ले जाना चाहते हो? आपका इरादा क्या है? उस महिला की उम्र ज्यादा थी फिर भी उन्होंने बच्चों की सुरक्षा के लिए जो साहस दिखाया वह तारीफ के काबिल है। अंततः उनके इस प्रयास ने बच्चे को गलत हाथो में जाने से बचा लिया। हालाँकि इस घटना से बच्चे

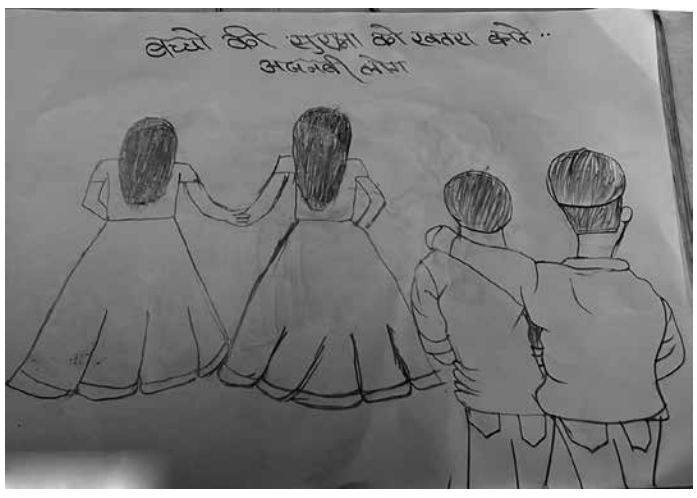

सहम गये थे और कुछ दिनों तक बाहर खेलने नहीं निकले रिपोर्टर राजकिशोर ने कहा की आप लोग अनजान आदमी से पैसे, खाने का सामान इत्यादि ना लें और ना ही उनके साथ कहीं जाएं। और यदि कोई जबरदस्ती आपको ले जाने की कोशिश करता है तो शोर मचाए एवं चिल्लाएँ साथ ही आसपास के लोगों को सूचित करें। बच्चों ने कहा की यहां पर आमतौर पर लोग कई बार चीज बांटने आते हैं एवं सड़क पर हम लोगों को दे देते हैं। नवरात्रि के समय में तो हम लोग बहुत सारा खाने-पीने का सामान इकट्ठा कर लेते हैं लेकिन आज तक कभी भी किसी ने हम लोगों को जबरदस्ती अपने साथ ले जाने की कोशिश नहीं की तो रिपोर्टर ने कहा ठीक है लेकिन हर एक आदमी अच्छा नहीं होता है हमें हर एक अनजान आदमी से सावधान रहना चाहिए।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

बारिश बनी आफत का सबब, झुग्गी टूटने के कारण बच्चे हुए सड़क पर रहने को मजबूर

बालकनामा रिपोर्टर- नितिन

यूँ तो बारिश का मौसम सभी को अच्छा लगता है पर क्या इस बार का ये बारिश का मौसम सड़क एवं कामकाजी बच्चों को उतना सुकून दे पाया? पश्चिमी दिल्ली में रहने वाली सोनिया 13 वर्ष (काल्पनिक नाम)बताती है कि उसे हर साल बारिश के मौसम में बहुत डर लगने लग जाता है क्योंकि हर साल बारिश के दिनों में उनके यहां अनेक तरह की बीमारियां फैलने लग जाती है व कई बार तो उनके घर से सांप और बिच्छू भी निकलने लगते हैं जिससे उन लोगों को जान का खतरा भी होता है। बातचीत के दौरान बालिका बताती है कि उसको लगता है की बारिश का

मौसम केवल उन्हीं लोगों के लिए अच्छा है जो पक्के घरों में रहते हैं। झुग्गी-झोपड़ीयों में रहने वाले लोगों के लिए बारिश का मौसम किसी आफत से कम नहीं है क्योंकि ना तो वे झुग्गी टपकने के कारण रात को सो पाते हैं और ना ही खाना बना पाते हैं, चेतना संस्था में पढ़ने वाला अन्य बालक आशु 11 वर्ष (काल्पनिक नाम) कहता है कि वह चूना भट्टी में रहता है, बारिश के सन्दर्भ में बालक ने कहा की हमारे यहाँ दो दिन लगातार बारिश आने के कारण कई झुग्गी अपने आप टूट कर गिर गई है और कई घर पानी की चपेट में आकर अपने आप गिर रहे हैं जिससे लोगों को मजबूर होकर सड़क पर रहना पड़ रहा है। वे लोग सड़क पर ही खाना बनाने के लिए मजबूर है, जिस वजह से इन बच्चों को बहुत सारी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बच्चे ना तो समय पर खाना खा पाते हैं और ना ही सुबह उठकर स्कूल जा पाते हैं। बातचीत में आशु आगे बताता है कि उसके यहां दिन में केवल एक ही बार खाना बन पाता है क्योंकि बारिश का पानी उनकी झुग्गी में घुस गया है और सारा समान भीग गया है जिस वजह से उनके यहाँ राशन तीनों समय के लिए पर्याप्त नहीं है। वह दबे स्वर में कहता है की वास्तव में यह बारिश नहीं आफत है क्योंकि बारिश का पानी शौचालयों और गलियों में भी भर चुका है जिस वजह से उन्हें शौचालय जाने में भी बहुत समय लगता है फलतः वह रोज स्कूल जाने में लेट हो जाता है और स्कूल में लेट जाने की वजह से उसे अपने अध्यापकों से रोज डांट खानी पड़ती है। मैं नितिन, बालकनामा रिपोर्टर, बालकनामा के माध्यम से सरकार से पूछना चाहता हूँ कि कब तक झुग्गी बस्तियों के लोग ऐसे ही बारिश के दिनों में परेशानियों का सामना करते रहेंगे?

कर्जा होने के कारण सड़क एवं कामकाजी बच्चे हुए शिक्षा से वंचित

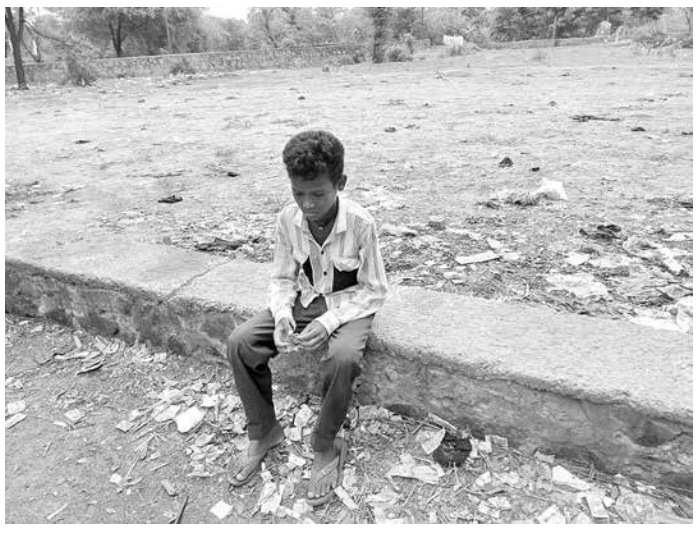

बालकनामा रिपोर्टरः काजल,
बातूनी रिपोर्टरः राजवीर

बालकनामा रिपोर्टर ने जब जयपुर की कच्ची बस्तियों का दौरा किया तो उस दौरान जयसिंहपुरा खोर कच्ची बस्ती में लगभग 9 वर्षीय बालक राज (परिवर्तित नाम) को पेड़ के नीचे उदास बैठे हुए देखा। रिपोर्टर ने बालक से बातचीत करने की कोशिश की और उससे पूछा कि तुम यहां क्या कर रहे हो और आज स्कूल क्यों नही गए? तथा रिपोर्टर ने बालक से उसकी उदासी का कारण जानने का प्रयास किया तो बालक राज ने बताया की मेरा दोस्त वीर (परिवर्तित नाम) जो लगभग 8 साल का है मेरे साथ स्कूल जाता था। हम साथ में खेलते और शाम को बहुत मस्ती करते थे एवं साइकिल भी चलाते थे। कई बार वीर के घर पर बस्ती के लोग लड़ाई करने चले आते थे क्योंकि उसकी माता-पिता ने बस्ती के कई लोगों से उधार ले रखा था, इस कारण उन पर बहुत कर्जा हो गया था। उसके पिता नशा करते थे, तो जो भी कमाते थे वे नशा करने में खर्च कर देते थे और उसकी माँ भीख मांगने का काम करती थी, इसलिए घर की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी। इसके अलावा वीर की माँ ने बैंक से लोन भी ले रखा था और कर्जा इतना बढ़ गया था कि उसको उतारना संभव नहीं था। कुछ समय पहले मेरे दोस्त ने स्कूल आना भी छोड़ दिया और चाय की दुकान पर काम करने लगा था लेकिन एक दिन बिना बताए रातों-रात मेरा दोस्त और उसका परिवार घर छोड़कर भाग गए। अब बस्ती में किसी को भी नहीं पता कि वे कहां गए है? बालक राज ने बहुत ही उदासीनता के साथ कहा कि मुझे मेरे दोस्त के बिना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता। काश! मैं अपने दोस्त की कुछ मदद कर पाता हालाँकि अभी मुझे भी पता नहीं है कि वे कहां चले गए हैं।

घर के हालातों ने हमें इतना मजबूर किया, मानों जैसे हमें हमारे बचपन से ही दूर किया

बालकनामा रिपोर्टरः राजकिशोर

जब हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर जलवायु टावर गुरु ग्राम की बस्तियों में दौरा करने के लिए गए तो वहां बच्चों से बाल संवाद के दौरान बहुत ही मन को झकझोर कर रख देने वाली बात निकल कर सामने आई। वहां एक बच्चे ने बताया कि हमारी ही इन बस्तियां में ही एक बच्चा रहता है जो की बस की साफ-सफाई का काम करता है। जब हमारे रिपोर्टर ने उनसे पूछा कि वह कितने साल का है? तो बच्चों ने बताया कि वह 10 साल के लगभग है और वह पास में ही बस की साफ-सफाई करता है। जब हमारे रिपोर्टर राजकिशोर ने इस बात की अच्छी तरीके से छानबीन की और बच्चों से इस मुद्दे पर विस्तृत चर्चा की

तो पता चला कि सच में ही एक 10 साल का बालक है और वह बस की साफ-सफाई करता है, राजकिशोर उस बच्चे से मिलने के लिए गए तो देखा कि वह बच्चा बस की साफ-सफाई कर रहा था, जब पत्रकार ने उस बच्चे से पूछा कि तुम इतनी छोटी सी उम्र में काम क्यों कर रहे हो? तो उस बालक ने उदासीनता के भाव से कहा की बस ऐसे ही काम करता हूँ। उस बच्चे से जब रिपोर्टर ने पूछा कि आपकी मम्मी-पापा कहाँ है? तो उसने बताया कि मेरे मम्मी-पापा काम पर गए हुए हैं और मैं घर पर अकेला ही रहता हूँ, थोड़ी और बातचीत करने के बाद उस बच्चे ने बताया कि वहीं के स्थानीय लोग उससे यह काम करवाते हैं। हालाँकि उस बच्चे ने ज्यादा बात तो नहीं बताई लेकिन उससे बात करने के बाद पूरी बात स्पष्ट हो गई जिसमें पत्रकार के यह पूछने पर की आप बस की साफ सफाई करते हो तो आपको इसके कितने पैसे मिलते हैं? तब बालक ने कहा की उसे इस काम के प्रतिमाह 1000 से 2000 रुपए मिल जाते है।

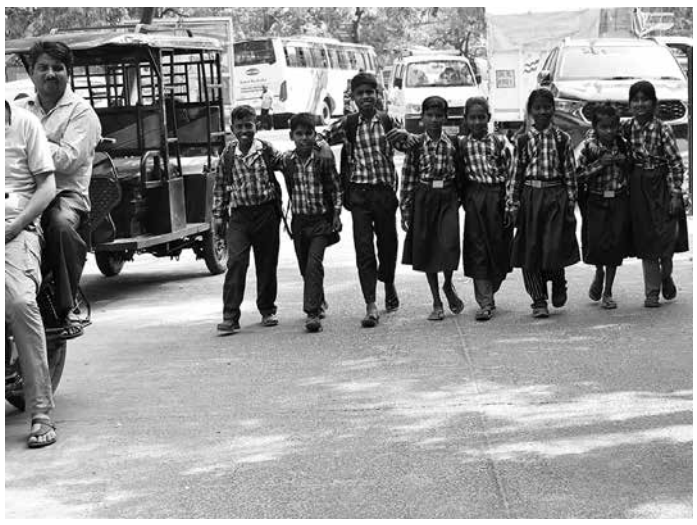

स्थानीय यातायात की देरी से बच्चों की स्कूल में देर हो जाती है

बातूनी रिपोर्टर का नाम - शाहीन

बच्चों के जीवन में वैसे तो छोटी-मोटी कई समस्याएं होती हैं लेकिन उन्ही में से कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जो उन्हें रोज प्रभावित करती है। ऐसी एक छोटी समस्या यह है कि कुछ बच्चों का विद्यालय घर के पास है तो कुछ बच्चों का विद्यालय घर से दूर है जिस कारण उन्हें सरकारी वाहनों से जाना पड़ता है या कुछ बच्चे तो पैदल ही इस दूरी का सफर तय करते हैं। इसी प्रकार केशव पुरम में स्थित उ-4 झुग्गियां है जहां से समुदाय के बच्चे पढ़ने के लिए पास के विद्यालय जाते हैं तो कुछ बच्चे जिनका दाखिला दूर हुआ है वह दूर के विद्यालय जाते हैं। दूर का विद्यालय जैसे मनेंद्र शक्ति जो समुदाय से कम से कम आधे घंटे की दूरी पर है वहां जाने के लिए बच्चों को सरकारी बसों की आवश्यकता होती है, तो कुछ बच्चे पैदल ही विद्यालय जाते हैं। सरकारी बस का समय पर ना मिलना अक्सर बच्चों के विद्यालय जाने में देरी का कारण बनता हैं। बच्चों को यह समस्या अमूमन रहती ही है कि बच्चे घर से तो समय पर निकलते हैं लेकिन जैसे ही बस स्टेशन पर जाते हैं तो उन्हें बस देरी से मिलती है तो कभी-कभी बस आती ही नहीं है जिस कारण उन्हें विद्यालय जाने में अक्सर देरी का सामना करना पड़ता है। कई बच्चों से बात करने पर पता चला कि कभी-कभी बस इतनी देरी से आती है कि समय अधिक लग जाता है जिस कारण विद्यालय में देरी से पहुंचते हैं और उन्हें असेंबली ग्राउंड में खड़ा कराया जाता है। उन्हें देर से आने की सजा मिलती है जिस कारण से बच्चे विद्यालय जाने के प्रति हतोत्साहित से हो जाते हैं और उनका मन उदास हो जाता है कि घर से जल्दी निकलने पर भी हम विद्यालय देरी से पहुंचते हैं। इसी कारण ज्यादातर बच्चे विद्यालय की छुट्टियां करते हैं और फिर स्कूल में पहुंचकर भी उन्हें देरी के कारण सजा मिलती है। सबके सामने उन्हें शर्मिंदगी महसूस होती है, छोटे-छोटे बच्चे जिनकी उम्र 8 से 10 वर्ष है रोज आधा घंटा चलकर पैदल जाते हैं। हालाँकि वे रोज इस समस्या का सामना करते हैं फिर भी शिक्षा के प्रति लगाव बच्चों को उनका मनोबल बढ़ाने में मदद करता है जिससे विद्यालय दूर होने के बावजूद भी वे रोज विद्यालय जाते हैं।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

झुग्गियों में बच्चे जमीन पर सोने को है मजबूर, सताता है डर

बातूनी रिपोर्टरः सुमित,
बालकनामा रिपोर्टर- राज किशोर

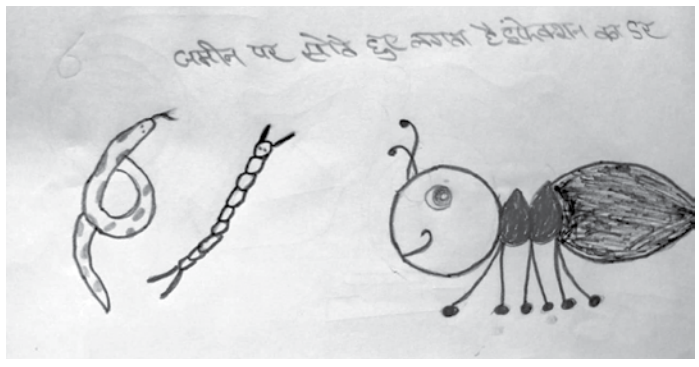

हमारे बालकनामा अखबार के रिपोर्टर राजकिशोर जब वजीराबाद (गुरुग्राम) के पीछे वाली बस्तियों में दौरा करने के लिए गए तो बच्चों से हुई चर्चा के दौरान ज्ञात हुआ की वहां पर बच्चे जमीन पर सोते हैं। इसी सन्दर्भ में बच्चों ने आगे बताया कि वहाँ एक बालक सुमित (काल्पनिक नाम) है जिसकी उम्र लगभग 11 साल है, वह पिछले 8-10 सालों से वजीराबाद के पीछे वाली झोपड़पट्टी में रह रहा है। इस प्रकार पत्रकार द्वारा सुमित से भेंट करने पर ज्ञात हुआ की वह मूलरूप से बंगाल का रहने वाला है। बातचीत के दौरान उसने कहा की हम बहुत ही छोटी टीन की झोपड़ी में निवास करते है और हम एक ही घर में पांच लोग रहते हैं जिससे कि हमारे घर में बहुत कम जगह है। उक्त उक्त कारणों से मेरी मम्मी खाट पर सोती है और हम जमीन पर सोते हैं। जब हम जमीन पर सोते हैं तो हमें बहुत ही ज्यादा डर लगता है क्योंकि हमारे बस्तियों में बहुत ज्यादा गंदी फैली होती है इसलिए कितना भी सफाई करो गंदगी रह ही जाती है। इसके अलावा हमारे घर के अंदर नेवले, चूहे, कनखजूरे और चीटियां इत्यादि घूमते रहते हैं। बरसात के मौसम में तो कई बार सांप भी निकलते हैं जोकि दिन में बहुत ही ज्यादा परेशान करते हैं, लेकिन दिन तो हम जैसे-तैसे काट लेते हैं लेकिन जब रात आती है तो जगह की कमी के कारण हम लोगों को जमीन पर ही सोना पड़ता है। नीचे सोते हैं तो कभी-कभी नेवले हमारे ऊपर चढ़ जाते हैं, कभी चींटी हमारे कानों में घुस जाती है जिस कारण हम लोग बहुत परेशान होते हैं और हमें बहुत ही ज्यादा डर लगता है। एक दिन तो मेरे भाई के हाथ में एक चूहे ने काट लिया था जिससे कि मेरे भाई के हाथ से खून बहने लगा था और मेरा भाई बहुत ही ज्यादा रोने लगा और डर गया, तब से वह जमीन पर सोने में डरता है। अब तो नीचे सोने में मुझे भी डर लगने लगा है क्योंकि जमीन पर सोने में जीव जंतुओं का खतरा तो है ही उसके साथ गंदे फर्श पर सोने से स्किन इन्फेक्शन का खतरा भी रहता है क्योंकि ये फर्श अक्सर गंदा ही रहता है कितना भी साफ कर लो उसके कीटाणु नहीं जाते, अब हम लोग क्या ही करें? इस समस्या का हमें कोई समाधान नहीं दिखता है।

दिनदहाड़े होने वाली चोरियों से बच्चों में बढ़ रहा है खौफ का माहौल

बातूनी रिपोर्टर - गुड्डन

दिल्ली के शहीद कैंप में उपस्थित सड़क और कामकाजी बच्चों का जीवन वैसे ही बहुत संघर्षपूर्ण है हालाँकि वे जीवन में आने वाली हर कठिनाईयों का सामना करने का भरसक प्रयास करते हैं पर इन कोशिशों में उन्हें जो मानसिक पीड़ा होती है, उसे समझ पाना बहुत ही मुश्किल है। शहीद कैंप निवासी 13 वर्षीय बालिका सीमा (परिवर्तित नाम) ने बताया की वैसे तो शहीद कैंप के समुदाय में रोजाना कुछ न कुछ घटनाएँ होती रहती हैं, जो यहाँ के लोगों के लिए आम बात हो गई है, पर कुछ ऐसी घटनाएँ भी होती हैं जिन्हें भूल पाना मुश्किल नहीं होता। सीमा ने बताया कि अभी कुछ दिनों पहले सुबह के समय चार चोर एक साथ घुसे और उन्होंने वहाँ चोरी की। चोरी करते समय घर के एक सदस्य ने जब उन्हें देख लिया तो उस सदस्य ने शोर मचा दिया, जिसकी वजह से चोर वहाँ से भाग गए। चोरों को भागते हुए देखकर वहाँ के लोगों ने उनका पीछा किया और उसी समय सीमा पास के नल से अपने घर के लिए पानी भर रही थी। चोर और उनका पीछा करने वाले लोग सीमा की तरफ आ रहे थे। दूर से ही उन्होंने सीमा को चेतावनी देने की कोशिश की, लेकिन दूरी की वजह से वह सुन नहीं पाई। चोर तेजी से सीमा की तरफ भागे और उसे जोर से धक्का दिया, जिससे वह पानी के नल के पास गिर गई और उसे चोट लग गई। वहाँ उपस्थित लोगों ने उसे उठाया और उसकी पट्टी करवाई। इस घटना से वहाँ के बच्चों में डर के भाव उत्पन्न हो गए है। सीमा ने स्वयं बताया कि जब चोर ने उसे धक्का दिया तो उसे एक पल के लिए लगा कि वह जीवित नहीं बचेगी और इस तरह उसके मन में एक डर बैठ गया। हालाँकि सीमा अब ठीक है, लेकिन उस घटना से उसके जीवन में एक भय सा बैठ गया है। उसका कहना है कि आखिर कब तक थोड़े से पैसों के लिए लोग इस तरह किसी से जान की परवाह न करते हुए, बस अपना ही फायदा देखेंगे और आखिर कब तक हमें बच्चों को अपनी सुरक्षा के बारे में डरते रहना पड़ेगा?

पत्रकार बैठकों से हो रहा बच्चों को कानूनी ज्ञानार्जन

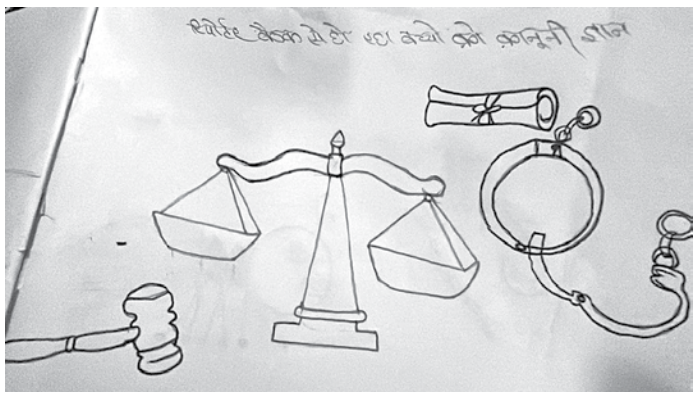

बालकनामा रिपोर्टरः राज किशोर,
बातूनी रिपोर्टरः अरमान

आज की खबर, बढ़ते कदम संगठन की सफलता की कहानी कह रही है। रिपोर्टर राजकिशोर ने बताया कि गुड़गांव में जब बढ़ते कदम संगठन सक्रिय नहीं था तो सड़क एवं कामकाजी बच्चों को अपने बाल अधिकार तक नहीं पता थे और बच्चों को शोषण का मतलब तक नहीं मालूम था। बच्चों को चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर की जानकारी नहीं थी और बच्चे अनजान और मासूम थे लेकिन जब से यहाँ बढ़ते कदम संगठन सक्रिय हुआ है बच्चों में एक नई चेतना का विकास हुआ है। रिपोर्टर राजकिशोर ने बच्चों से जब बढ़ते कदम के काम को लेकर बातचीत की तो रिपोर्टर बैठक में बहुत ही अचंभित करने वाली बातें निकल कर सामने आई। बच्चों ने बताया कि जब से बढ़ते कदम से हम लोग जुड़े हैं हम लोगों में एक नई चेतना जगी है, रिपोर्टर बैठक के द्वारा बच्चों बाल अधिकार का ज्ञान हुआ की बच्चों के चार अधिकार होते हैं (1)जीने का अधिकार (2) सुरक्षा का अधिकार (3)विकास का अधिकार (4)भागीदारी का अधिकार। बच्चों ने बताया कि जीवन जीने का अधिकार में रोटी कपड़ा और मकान और सुरक्षा का अधिकार में बच्चों को कोई मारे-पीटे नहीं, जबरदस्ती काम ना कराये और उनका शारीरिक और मानसिक शोषण न करें। यदि कोई ऐसा करता है तो उसका विरोध करें और चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर की मदद से उसे सजा दिलायें। हमने विकास के अधिकार में जाना कि बच्चों के लिए शिक्षा और खेलकूद बहुत जरूरी है जिसके कारण आज बहुत से बच्चे शिक्षा और खेलकूद के क्षेत्र में अपना नाम रोशन कर रहे हैं और भागीदारी के अधिकार से जाना कि हम लोगों की भागीदारी भी सुनिश्चित है। बढ़ते कदम से ही हम लोगों को चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर की जानकारी हुई है। अब, जब भी कोई बच्चा मुसीबत में होता है तो हम तुरंत ही चाइल्ड हेल्पलाइन की मदद लेते हैं। चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर बच्चों की हेल्प करता है। आज बढ़ते कदम के कारण, सड़क और कामकाजी बच्चे सरकारी एवं गैर सरकारी मीटिंग में भाग लेते है और अपने विचार निर्भीकता पूर्ण रखते हैं। बढ़ते कदम के कारण ही आज 1098, सड़क और कामकाजी बच्चों का दोस्त बन चुका है और फिर बच्चों ने बताया फायर ब्रिगेड का नंबर 101 है, बच्चों ने बताया कि अगर हम कहीं आग लगी देखते है तो तुरंत फायर ब्रिगेड को फोन कर सकते हैं और फिर बच्चों ने पुलिस के नंबर बताएं 100 एवं 112। बच्चों ने ह्यूमन हेल्पलाइन नंबर के बारे में बताया जिसमें बच्चों ने कहा बढ़ते कदम के कारण बच्चे तो बच्चे हमारे माता-पिता भी जागरूक हुए हैं। बहुत से बच्चों के जीवन में परिवर्तन आया है, जो बच्चे पहले काम करते थे आज वह स्कूल जा रहे हैं और मन लगाकर पढ़ाई कर रहे हैं। बढ़ते कदम ने हम लोगों में आत्मविश्वास जगा दिया है। आज बढ़ते कदम के सदस्य एक लीडर बनकर उभर रहे हैं और समाज में उनकी अलग पहचान बन रही है। लोग जानते है कि यह बढ़ते कदम का लीडर है इसे बहुत जानकारी है और बढ़ते कदम के लीडर ने मौका पड़ने पर बहुत सारे बच्चों की मदद भी की है।

शकूर बस्ती के बच्चे गर्मी की छुट्टियों के बाद गांवों से दिल्ली नहीं लौटे, शिक्षा पर खतरा

बालकनामा रिपोर्टर - हंस कुमार

दिल्ली की चहल-पहल के बीच शकूर बस्ती इलाके में एक अजीबोगरीब घटना देखने को मिली। जब बालकनामा रिपोर्टर हंस कुमार उत्तर पश्चिमी दिल्ली के शकूर बस्ती इलाके का दौरा करने गए तो उन्हे वहां पर मौजूद कुछ बच्चों और स्थानीय लोगो से पता चला कि गर्मी की छुट्टियों के बीतने के पश्चात जब स्कूल फिर से खुले, तो इलाके के कई बच्चे स्कूल नहीं लौटे। इसके बजाय, उन्होंने अभी भी कुछ और दिन अपने गांवों में ही रहने का फैसला किया है। शकूर बस्ती के कई बच्चे गर्मियों की छुट्टियों के बाद दिल्ली नहीं लौटे है। बहरहाल इस फैसले के पीछे की वजह अभी तक स्पष्ट नहीं हैं, लेकिन ऐसा लगता है की गांव की जिंदगी का आकर्षण और दादा-दादी एवं परिवार के अन्य सदस्यों व गांव के मित्रों के करीब रहने की सहूलियत ने उनके इस फैसले में अहम भूमिका निभाई है। बड़ी संख्या में इन विद्यार्थियों के अपनी कक्षाओं से गायब रहने के कारण न केवल स्कूलों में बच्चों की उपस्थिति प्रभावित हो रही है, बल्कि इन बच्चों का भविष्य भी खतरे में पड़ रहा है। ये सभी बच्चे गरीब पृष्ठभूमि से आते हैं और अपने लिए बेहतर भविष्य सुरक्षित करने के साधन के रूप में शिक्षा पर निर्भर हैं। स्कूल से गायब होने से, वे न केवल शिक्षा ग्रहण के अवसरों को खो रहे हैं, बल्कि अपने भविष्य को भी खतरे में डाल रहे हैं। माता-पिता या अभिभावकों से जिम्मेदारी लेने और यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया गया है कि उनके बच्चे जल्द से जल्द स्कूल लौट आएं। जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं, इन अनुपस्थित बच्चों का नाम स्कूल के रिकॉर्ड से कटने का खतरा है, जिससे उनका शैक्षणिक भविष्य और भी जटिल हो रहा है।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए सरदार नगीना सिंह जी और परिवार तथा अभिनव इमिग्रेशन सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471